 ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ 

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमति ज्ञान

माघ-फाल्गुन, संवत् नानकशाही ५४६
वर्ष ८ अंक ६ फरवरी **2015**

संपादक : सिमरजीत सिंघ
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग **303** संपादकीय विभाग **304**



फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

दारिदु देखि सभ को हसै ऐसी दसा हमारी ॥
असट दसा सिधि कर तलै सभ क्रिपा तुमारी ॥१॥
तू जानत मै किछु नही भव खंडन राम ॥
सगल जीअ सरनागती प्रभ पूरन काम ॥१॥ रहाउ ॥
जो तेरी सरनागता तिन नाही भारु ॥
ऊच नीच तुम ते तरे आलजु संसारु ॥२॥
कहि रविदास अकथ कथा बहु काइ करीजै ॥
जैसा तू तैसा तुही किआ उपमा दीजै ॥३॥ *(पन्ना ८५८)*

बिलावल राग में उच्चारण किए गए उपरोक्त शबद में भक्त रविदास जी मनुष्य को प्रभु की शरण में जाने तथा प्रभु के नाम-सिमरन की महिमा का बखान करते हुए समझा रहे हैं कि प्रभु-नाम-सिमरन से ही मनुष्य आत्मिक उच्चता को प्राप्त कर सकता है।

भक्त रविदास जी फरमान कर रहे हैं कि इस संसार में किसी की दरिद्रता को देखकर लोग हंसते हैं। ऐसी ही दशा मेरी (भक्त रविदास जी) भी थी। कहने से तात्पर्य, भक्त रविदास जी सांसारिक जीवन में आर्थिक रूप से इतने निर्धन थे कि लोग उनकी निर्धनता का मज़ाक उड़ाया करते थे। वे फरमान करते हैं कि हे प्रभु! यह सब आपकी ही कृपा के कारण है कि अब मेरे पास अठारह सिद्धियां हैं भावार्थ भक्त जी प्रभु-भक्ति द्वारा आत्मिक रूप से बहुत ऊंचे हो गए हैं और वे इस उच्चता को प्रभु की कृपा ही मानते हैं। भक्त रविदास जी प्रभु को मनुष्य के जन्म-मरण के चक्कर का नाश करने वाला संबोधित करते हुए फरमान करते हैं कि हे भव खंडन! आप जानते हैं कि आपकी सामर्थ्य के सामने मैं कुछ भी नहीं अर्थात् आपके सामने मैं तुच्छ हूं। हे सबकी कामना पूर्ण करने वाले प्रभु! सभी आपकी शरण में आते हैं। मैं भी आपकी शरण में हूं। जो आपकी शरण में आ जाते हैं, उन पर विकारों का बोझ नहीं लदता अर्थात् वे विकार-मुक्त हो जाते हैं। इस संसार में रहते हुए चाहे कोई छोटा है या बड़ा सब आपकी शरण में आने से, आपकी कृपा से मुक्तावस्था को प्राप्त होते हैं।

अंतिम पंक्तियों में भक्त रविदास जी का फरमान है कि हे प्रभु! आपके गुण बखान नहीं किए जा सकते। कितनी भी कोशिश की जाए आपके असंख्य गुणों का कथन करना मुमकिन नहीं है अर्थात् मनुष्य परमात्मा की जितनी भी उपमा करे वो कम है; परमात्मा की पूर्ण रूप से उपमा करना मनुष्य के वश में नहीं है। हे प्रभु! आप जैसा इस संसार में कोई नहीं। अपने जैसे आप खुद ही हो। ऐसे में आपकी जितनी भी उपमा की जाए कम है। कहने से तात्पर्य, परमात्मा जैसा कोई अन्य नहीं, इसलिए उसकी जितनी भी उपमा की जाए कम ही लगती है। 



मानवाधिकारों के पहरेदार : गुरु साहिबान

श्री गुरु नानक देव जी द्वारा सुसज्जित सिक्ख पंथ अकाल पुरख की रहमतों का पात्र बनकर आज भी विश्व भर में अच्छाई बांट रहा है। भारत के किसी भी कोने में कोई विपत्ति आ जाए तो सिक्ख उनकी मदद हेतु बिना किसी विलम्ब के अपनी जान की परवाह किए बिना पहुंच जाते हैं। ये बिना किसी रंग, नसल, जाति, ऊंच-नीच के भेदभाव के सेवा में जुट जाते हैं। सरबत्त के भले की कामना करना इनकी रोज़मर्रा की अरदास का हिस्सा है। सिक्खों को सच, धर्म एवं दीन-दुखियों की मदद हेतु लड़ने-मरने की शिक्षा जन्म-घुट्टी के रूप में ही प्राप्त हो जाती है। यही कारण है कि दुनिया भर में अपनी विजय की पताका लहराने वाले राजे, महाराजे तथा सम्राट भी श्री गुरु नानक देव जी की सोच के समक्ष अपना शीश झुकाए बिना नहीं रह सके।

श्री गुरु नानक देव जी के समक्ष बाबर का जुल्म हार गया। हुमायूं ने श्री गुरु अंगद देव जी के आगे घुटने टेक दिए। जलालुद्दीन अकबर हमेशा ही श्री गुरु अमरदास जी तथा श्री गुरु रामदास जी की विचारधारा का श्रद्धालु रहा। जहांगीर की मज़हबी कट्टरता श्री गुरु अरजन देव जी को सच के मार्ग से हटाने के लिए घोर यातनाएं देने के बावजूद भी हार गई। अब्दुल सुज़हफर शहाबुद्दीन शाहजहां हमेशा ही श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी का साथ पाने के लिए उनके दर्शन की इच्छा करता रहा। बादशाह औरंगजेब ने श्री गुरु हरिराय साहिब एवं श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब को डराने-धमकाने के लाखों प्रयत्न किए परंतु कामयाब न हो सका। अपनी अनेकों घटिया चालों के बावजूद भी वह श्री गुरु तेग बहादर साहिब को सिक्खी के मार्ग से नहीं हटा सका। इसके विरोध में गुरु जी ने सच के मार्ग पर पहरा देते हुए दिल्ली के चांदनी चौक में शहीदी प्राप्त की। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने तो सिक्खी के मार्ग पर चलते हुए ऐसे कारनामे कर दिखाए जो दुनिया के इतिहास में न कभी किसी ने सुने थे और न देखे थे। सच के मार्ग पर चलते हुए उन्होंने अपना सारा परिवार कुर्बान कर दिया। इतिहास साक्षी है कि झूठ अथवा बदी का चाहे जितना भी पसार हो जाए परंतु विजय सदैव सच की होती है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने औरंगजेब को लिखे 'जफ़रनामा' में स्पष्ट ज़िक्र किया है :

न ज़ेबद तुरा नामि औरंगज़ेब ॥
जि औरंगजेबां न बाइद फरेब ॥
तूं खूने बहादर बदादी सरिशत ॥
तुरां तुरक ताज़ी व मकरो रया ॥
मरा चारा साजी वा सिददो सफा ॥

अर्थात् हे औरंगजेब! छल-कपट करना राजाओं का काम नहीं। तू तो अपने बाप को धोखे से कारावास में बंद करके उसकी इज़्जत खराब कर रहा है। तूने अपने भाइयों का जल्लाद बनकर

रक्त चूसा है। छल-कपट करना तथा लूटना तेरा प्रतिदिन का काम हो गया है किंतु मेरा रास्ता सच का है, मुझे मेरे अकाल पुरख पर पूर्ण भरोसा है।

दुनिया ने देखा कि सच की विजय हुई और छल-कपट की पराजय। १८वीं शताब्दी के विद्वान जनरल कार्ल बोन कलाजबज का विचार है कि मात्र युद्ध-स्थल में जीत जाने को जीत नहीं माना जाता बल्कि शरीर एवं आत्मा पर से भारी शक्तियों का नाश करना भी कहीं ज्यादा महत्ता रखता है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की महानता इसलिए भी उजागर होती है कि वे जहां अपने मन को पूरा काबू में रखते हैं वहीं साथ ही जंग के मैदान में से भी जीतकर निकलते हैं, जबकि औरंगजेब इन दोनों क्षेत्रों में असफल रहता है। औरंगजेब की मृत्यु के समय उसके तकिए के नीचे से एक ख़त निकला। इस ख़त को मुगल काल के प्रसिद्ध लेखक मौलवी हमीद-उद्दीन ने औरंगजेब के जीवन सम्बंधी लिखी फारसी की पुस्तक के आठवें अध्याय में शामिल किया है। उसके अनुसार :-

". . .इस बात में कोई संदेह नहीं कि मैं हिंदोस्तान का शहंशाह रहा हूं। मैंने हकूमत की है, मगर मुझे खेद है कि मैं कोई अच्छा काम नहीं कर सका। मेरी अंतरात्मा फटकार-फटकार कर कह रही है कि मैं 'गुनाहगार' हूं किंतु अब इसका कोई लाभ नहीं।. . . मेरी कब्र किसी घने जंगल में खोदना। जब मुझे दफ़नाया जाए तो मेरा मुंह नंगा रखना। मैं नंगे सिर अल्ला ताला के दरबार में पेश होना चाहता हूं। मुझे बताया गया है कि अगर कोई नंगे सिर प्रभु की दरगाह में पेश होता है तो खुदा उसके सारे गुनाह माफ़ कर देता है। . . . मेरी कब्र पर या इसके आस-पास कोई ठंडी छांव वाला वृक्ष न लगाना। मुझ जैसे पापी को कोई हक नहीं कि वह किसी वृक्ष की ठंडी छांव का आनंद ले।. . . परमात्मा किसी को भी बादशाह न बनाए। मेरी राय है कि दुनिया का सबसे बदबख़्त (अभागा) मनुष्य वह होता है जो बादशाह होता है। मैं अपने पुत्रों को नसीहत देता हूं कि वे किसी पर विश्वास न करें।. . . दुश्मनों को ख़त्म करते-करते मैं खुद ही खत्म हो गया हूं।"

यह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा लिखे गए जफ़रनामे का ही कमाल था कि कट्टर मज़हबी ख़्यालों वाले बादशाह को अपने किए गलत कामों पर पश्चाताप हो रहा था। गुरु साहिबान द्वारा मिली प्रेरणा सदका सिक्ख आज भी प्रत्येक मुश्किल के हल के लिए उसके समक्ष डटकर खड़े हो जाते हैं, जो दुनिया के सामने एक मिसाल है।

आज के ज़माने में सोशल मीडिया का चलन हमारे जीवन का अभिन्न अंग बनता जा रहा है। कुछ शरारती एवं सिरफिरे लोग इस माध्यम का इस्तेमाल सिक्ख गुरु साहिबान का अपमान करने एवं सिक्खों पर व्यंग्य कसने के लिए कर रहे हैं। यह अति निंदनीय कार्य है। ये लोग गुरु साहिबान के जीवन एवं उनकी विचारधारा के बारे में कुछ भी नहीं जानते। सिक्ख जहां सभी धर्मों का सत्कार करते हैं वहां अन्य धर्मावलंबियों से भी ऐसे ही सम्मान की अपेक्षा रखते हैं। दुनिया के हर बाशिंदे को इनका सत्कार करना चाहिए। 

भक्त रविदास जी की बाणी एवं विचारधारा

*-डॉ. परमजीत कौर**

आडंबर तथा कर्मकांड का निषेध करने वाले, प्रेम को भक्ति का आधार मानकर अपने इष्ट, सर्वव्यापक परमात्मा की आराधना में लीन रहने वाले बनारस के निवासी भक्त रविदास जी ने निम्नलिखित सोलह रागों में बाणी की रचना की है :-

सिरीराग, गउड़ी, आसा, गूजरी, सोरठि, धनासरी, जैतसरी, सूही, बिलावलु, गोंड, रामकली, मारू, केदारा, भैरउ, बसंत, मलार।

आपके द्वारा उच्चरित कुल ४० शबद हैं जिनमें गुरमति के सिद्धांतों का प्रतिपादन किया गया है।

मानव जीवन को सफल बनाने के लिए परमात्मा की बंदगी आवश्यक है। इस संसार में कोई भी जीव सदा के लिए नहीं रहता। जैसे पक्षी वृक्ष पर रात भर के लिए निवास करते हैं, इसी तरह सब को संसार में कुछ समय बिताकर यहां से जाना पड़ता है। जीव यह न समझता हुआ, ऊंचे-ऊंचे महल बनाकर उन्हें स्थायी समझता हुआ राग-द्वेष में पड़कर जीवन को व्यर्थ गंवा रहा है। भक्त रविदास जी कहते हैं कि मनुष्य को अपने अंतिम समय के लिए केवल साढ़े तीन हाथ स्थान की ज़रूरत होती है :

जल की भीति पवन का थंभा रकत बुंद का गारा ॥
हाड मास नाड़ी को पिंजरु पंखी बसै बिचारा ॥१॥
प्रानी किआ मेरा किआ तेरा ॥
जैसे तरवर पंखि बसेरा ॥१॥ रहाउ ॥
राखहु कंध उसारहु नीवां ॥
साढे तीनि हाथ तेरी सीवां ॥ (पन्ना ६५९)

संसार के मोह में ग्रस्त न होकर राग-द्वेष को छोड़कर प्रभु की भक्ति करनी चाहिए :

करि बंदिगी छाडि मै मेरा ॥
हिरदै नामु सम्हारि सवेरा ॥ (पन्ना ७९४)

यदि प्रभु की बंदगी न की जाये तो राजा इंद्र के महल के समान बनाए गृह किसी काम के नहीं; शारीरिक सुख व्यर्थ हैं :

दुलभ जनमु पुंन फल पाइओ बिरथा जात अबिबेकै ॥
राजे इंद्र समसरि ग्रिह आसन बिनु हरि भगति कहहु किह लेखै ॥ (पन्ना ६५८)

भक्त रविदास जी समझा रहे हैं कि जानते-समझते हुए भी हम बावरे तथा मूर्ख बने हुए हैं। हमारी आयु के दिन अच्छे-बुरे विचारों में बीत रहे हैं। हम दुविधा में पड़े रहते हैं। हमारी विचार-शक्ति क्षीण हो रही है। इस बात का हमें कभी ध्यान ही नहीं आया कि हमारे जीवन का उद्देश्य क्या है? हमारी सबसे महत्त्वपूर्ण आवश्यकता क्या है? हमारे जीवन की विडंबना यह है कि हम कहते कुछ और हैं तथा करते कुछ और। माया की प्रबलता के कारण हमें अपनी मूर्खता का बोध नहीं होता :

जानि अजान भए हम बावर सोच असोच दिवस जाही ॥
इंद्री सबल निबल बिबेक बुधि परमारथ परवेस नही ॥

६२०, गली नं. २, छोटी लाइन, संतपुरा, यमुनानगर-१३५००१ (हरियाणा); फोन : ९८१२३-५८१८६

कहीअत आन अचरीअत अन कछु समझ न परै अपर माइआ ॥ *(पन्ना ६५८)*

भक्त रविदास जी के मत में दिखावे के रूप में किए गए दान, यज्ञ, देव-पूजा, तीर्थ-स्नान मनुष्य को माया के बंधनों से मुक्त नहीं कर सकते और न ही प्रभु-चरणों से जोड़ सकते हैं :

अनिक जतन निग्रह कीए टारी न टरै भ्रम फास ॥
प्रेम भगति नही ऊपजै ता ते रविदास उदास ॥
(पन्ना ३४६)

साधारणतया मनुष्य धर्म-ग्रंथों की कथा सुनते हैं, तीर्थों के स्नान को अधिक महत्त्व देते हैं तथा तरह-तरह के कर्मकांडों में व्यस्त रहते हैं। भक्त जी के मत में परमात्मा के नाम-सिमरन के बिना धर्म-पुस्तकों का रटन तथा कर्मकांडों के सारे आडंबर व्यर्थ ही जाते हैं। दुनिया के विकारों से बचकर जीवन का सही मार्ग खोजने के लिए परमात्मा की भक्ति ही एक मात्र उपाय है :

हरि हरि हरि न जपहि रसना ॥
अवर सभ तिआगि बचन रचना ॥ (पन्ना ६५८)

परमात्मा का नाम ही आरती तथा तीर्थ-स्नान है :

नामु तेरो आरती मजनु मुरारे ॥
हरि के नाम बिनु झूठे सगल पासारे ॥
(पन्ना ६९४)

जो परमात्मा के गुण गाता है तथा नाम जपता है, वही वास्तविक योगी है :

बरन सहित जो जापै नामु ॥
सो जोगी केवल निहकामु ॥ *(पन्ना ११६७)*

कर्मकांडों से मन की भटकना समाप्त नहीं होती। कर्मकांडों तथा आडंबरों की निरर्थकता के बारे में समझाते हुए भक्त रविदास जी कहते हैं कि लोग अपनी तरफ से देवी-देवताओं की मूर्तियों को जल, दूध तथा फल आदि से प्रसन्न करने का प्रयत्न करते हैं परंतु ये वस्तुएं तो पहले ही जूठी हो जाती हैं। दूध तो थनों से ही बछड़े ने जूठा कर दिया होता है। फूल को भंवरा सूंघकर तथा पानी को मछली जूठा कर देती है। ये वस्तुएं परमात्मा के समक्ष भेंट करने योग्य नहीं रह जातीं। परमात्मा ऐसी वस्तुओं की भेंट से प्रसन्न नहीं होता। वह तो तन, मन की भेंट मांगता है :

दूधु त बछरै थनहु बिटारिओ ॥
फूलु भवरि जलु मीनि बिगारिओ ॥१॥
माई गोबिंद पूजा कहा लै चरावउ ॥
अवरु न फूलु अनूपु न पावउ ॥१॥ रहाउ ॥
मैलागर बेर्हे है भुइअंगा ॥
बिखु अंम्रितु बसहि इक संगा ॥२॥
धूप दीप नईबेदहि बासा ॥
कैसे पूज करहि तेरी दासा ॥३॥
तनु मनु अरपउ पूज चरावउ ॥
गुर परसादि निरंजनु पावउ ॥४॥
पूजा अरचा आहि न तोरी ॥
कहि रविदास कवन गति मोरी ॥५॥(पन्ना ५२५)

जीव की मन की स्थिति के बारे में स्पष्ट करते हुए भक्त जी कहते हैं कि इस क्षणभंगुर संसार में माया के चक्रव्यूह में फंसा हुआ जीव सदा भटकता रहता है तथा कभी-कभी हास्यास्पद स्थिति में भी पहुंच जाता है। भक्त रविदास जी विस्तार से समझाते हैं कि माया के मोह में फंसकर जीव चारों तरफ माया को ही ढूंढता है। माया की ही बातें सुननी तथा करनी उसे अच्छी लगती हैं। वह सदैव माया के ही पीछे दौड़ता फिरता है। जब कुछ धन प्राप्त हो जाता है तो अहंकार करने लगता है, जब नष्ट हो जाता है तो दुखी होता है। अपने मन, वचन तथा कर्म द्वारा वह विषयों के आस्वादन में फंसा

रहता है। केवल परमात्मा से प्रेम ही जीव को इस स्थिति से बचा सकता है :

माटी को पुतरा कैसे नचतु है ॥
देखै देखै सुनै बोलै दउरिओ फिरतु है ॥१॥ रहाउ ॥
जब कछु पावै तब गरबु करतु है ॥
माइआ गई तब रोवनु लगतु है ॥१॥
मन बच क्रम रस कसहि लुभाना ॥
बिनसि गइआ जाइ कहूं समाना ॥२॥
कहि रविदास बाजी जगु भाई ॥
बाजीगर सउ मुोहि प्रीति बनि आई ॥३॥
(पन्ना ४८७)

इसके अतिरिक्त इस संसार में रहते हुए सभी लोग सदैव अपनी चमड़ी से जुड़े रहते हैं। स्वयं को केवल शरीर समझकर शरीर के ही पालन-पोषण में लगे रहते हैं। जैसे गरीब मनुष्य बार-बार अपना जूता गंठवाता रहता है ताकि वह लंबे समय तक काम आ सके, वैसे ही माया-लिप्त जीव अपने शरीर को अच्छे भोजन तथा सुंदर पोशाक रूपी पेबंद लगाता रहता है। भक्त रविदास जी समझा रहे हैं कि मनुष्य को हर समय शरीर की ओर ध्यान लगाना छोड़कर परमात्मा के नाम-सिमरन को अपना मुख्य कर्म बनाना चाहिए :

चमरटा गांठि न जनई ॥
लोगु गठावै पनही ॥१॥ रहाउ ॥
आर नही जिह तोपउ ॥
नही रांबी ठाउ रोपउ ॥१॥
लोगु गंठि गंठि खरा बिगूचा ॥
हउ बिनु गांठे जाइ पहूचा ॥२॥
रविदासु जपै राम नामा ॥
मोहि जम सिउ नाही कामा ॥३॥ (पन्ना ६५९)

भक्त जी के मत में संपत्ति, विपत्ति, हर्ष शोक ये सब माया के पर्दे हैं जो मनुष्य की बुद्धि पर पड़े रहते हैं, परमात्मा का नाम जपने वाला, परमात्मा से प्रेम करने वाला इन सबसे प्रभावित नहीं होता :

संपति बिपति पटल माइआ धनु ॥
ता महि मगन होत न तेरो जनु ॥
प्रेम की जेवरी बाधिओ तेरो जन ॥
कहि रविदास छूटिबो कवन गुन ॥ (पन्ना ४८६)

माया-मोह के बंधनों को तोड़ने का एक ही तरीका है-- प्रभु से प्रेम। यदि हृदय में परमात्मा के प्रति प्रेम पैदा हो जाये तो मनुष्य संसार में रहता हुआ भी निर्लिप्त रहना सीख लेता है :

जउ हम बांधे मोह फास हम प्रेम बधनि तुम बाधे ॥
अपने छूटन को जतनु करहु हम छूटे तुम आराधे ॥१॥
माधवे जानत हहु जैसी तैसी ॥
अब कहा करहुगे ऐसी ॥ (पन्ना ६५८)

भक्त का प्रभु से प्रेम गिरिवर-मोर, दीपक-बाती तथा चंद्र-चकोर की प्रीति जैसा होता है। प्रभु से प्रेम हो जाये तो अन्य सबका मोह टूट जाता है :

जउ तुम गिरिवर तउ हम मोरा ॥
जउ तुम चंद तउ हम भए है चकोरा ॥१॥
माधवे तुम न तोरहु तउ हम नही तोरहि ॥
तुम सिउ तोरि कवन सिउ जोरहि ॥१॥ रहाउ ॥
जउ तुम दीवरा तउ हम बाती ॥
जउ तुम तीरथ तउ हम जाती ॥२॥
साची प्रीति हम तुम सिउ जोरी ॥
तुम सिउ जोरि अवर संगि तोरी ॥(पन्ना ६५८)

परमात्मा का प्रेम प्राप्त करने के लिए प्रभु का गुण-कीर्तन तथा नाम-सिमरन आवश्यक है :

-जोगीसर पावहि नही तुअ गुण कथनु अपार ॥
प्रेम भगति कै कारणै कहु रविदास चमार ॥
(पन्ना ३४६)

-तुमरे भजन कटहि जम फांसा ॥
भगति हेत गावै रविदासा ॥ (पन्ना ६५९)

भक्त रविदास जी दृढ़ करवा रहे हैं कि सर्वव्यापक परमात्मा सब जीवों में अनेक रूपों में बस रहा है तथा जीवों के साथ उसका निकट का संबंध है। वह दूर नहीं बहुत समीप है। वह तो हाथ से भी नज़दीक है :

सरबे एकु अनेकै सुआमी सभ घट भुोगवै सोई ॥
कहि रविदास हाथ पै नेरै सहजे होइ सु होई ॥
(पन्ना ६५८)

जीव परमात्मा का ही अंश है। परमात्मा तथा जीवों में ऐसा ही अंतर है जैसा सोने तथा सोने के कड़ों में और पानी तथा पानी की लहरों में :

तोही मोही मोही तोही अंतरु कैसा ॥
कनक कटिक जल तरंग जैसा ॥ (पन्ना ९३)

जब तक जीव के अंदर अहंकार होता है तब तक परमात्मा के सामीप्य का अनुभव नहीं होता, वह दूर प्रतीत होता है :

जब हम होते तब तू नाही अब तूही मै नाही ॥
अनल अगम जैसे लहरि मइ ओदधि जल केवल जल मांही ॥ (पन्ना ६५७)

प्रभु से प्रीति बनी रहे, इसके लिए आवश्यक है कि चित्त प्रभु के सिमरन में लगा रहे, कानों से गुरबाणी सुनी जाए तथा जीभ (रसना) से सदा नाम जपा जाए :

चित सिमरनु करउ नैन अविलोकनो स्रवन बानी सुजसु पूरि राखउ ॥
मनु सु मधुकरु करउ चरन हिरदे धरउ रसन अंम्रित राम नाम भाखउ ॥
मेरी प्रीति गोबिंद सिउ जिनि घटै ॥
मै तउ मोलि महगी लई जीअ सटै ॥
(पन्ना ६९४)

अपनी बाणी द्वारा साधसंगत के महत्त्व का प्रतिपादन करते हुए भक्त जी समझाते हैं कि साधसंगत के बिना प्रभु के प्रति प्रीति पैदा नहीं होती तथा प्रीति के बिना भक्ति नहीं हो सकती :

-साधसंगति बिना भाउ नही उपजै भाव बिनु भगति नही होइ तेरी ॥ (पन्ना ६९४)
-मिलत पिआरो प्रान नाथु कवन भगति ते ॥
साधसंगति पाई परम गते ॥ (पन्ना १२९३)

परमात्मा का सिमरन नीच जाति के कहलवाने वाले लोगों को भी ऊंचा बना देता है :

जो तेरी सरनागता तिन नाही भारु ॥
ऊच नीच तुम ते तरे आलजु संसारु ॥
(पन्ना ८५८)

जो मनुष्य नाम जपता है, उसकी जाति आदि समाप्त हो जाती है और उसका जन्म-मरण मिट जाता है :

कहि रविदास जुो जपै नामु ॥
तिसु जाति न जनमु न जोनि कामु ॥
(पन्ना ११९६)

परमात्मा नीच कहे जाने वाले जनों को भी ऊंचा बना देता है :

जा की छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै ॥
नीचह ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै ॥
(पन्ना ११०६)

आपके मत में चाहे कोई (तथाकथित) ब्राह्मण, वैश्य, शूद्र, क्षत्रिय या डूम, चंडाल हो अथवा मलिन मन वाला हो, परमात्मा का भजन करने से पवित्र हो जाता है। वह अपने आपको संसार समुद्र से पार लगाकर अपनी कुल को भी पार लगवा देता है :

ब्रहमन बैस सूद अरु खत्री डोम चंडार मलेछ मन सोइ ॥
होइ पुनीत भगवंत भजन ते आपु तारि तारे कुल दोइ ॥ (पन्ना ८५८)

भक्त जी के मत में प्रभु-नाम-सिमरन से हीन व्यक्ति ही वास्तव में नीच है। आपके अनुसार यदि कोई मनुष्य उच्च समझी जाने वाली ब्राह्मण कुल में पैदा होता है तथा नित्य छ: कर्म करता है परंतु यदि उसके हृदय में प्रभु की भक्ति नहीं, प्रभु के प्रति प्रेम नहीं, तो उसे नीच ही समझो :

खटु करम कुल संजुगतु है हरि भगति हिरदै नाहि ॥
चरनारबिंद न कथा भावै सुपच तुलि समानि ॥१॥
रे चित चेति चेत अचेत ॥
काहे न बालमीकहि देख ॥
किसु जाति ते किह पदहि अमरिओ राम भगति बिसेख ॥ *(पन्ना ११२४)*

चाहे कोई महान विद्वान हो, चाहे शूरवीर या छत्रपति राजा हो, बिना प्रभु-भक्ति के परमात्मा के भक्त के बराबर नहीं हो सकता :

पंडित सूर छत्रपति राजा भगत बराबरि अउरु न कोइ ॥ *(पन्ना ८५८)*

भक्त जी ने अपनी बाणी में आत्मिक उन्नति में सहायक मानवीय गुणों का प्रातिपादन करते हुए सचेत किया है कि काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, निंदा, ईर्ष्या आदि ऐसे अवगुण हैं जो मनुष्य को आत्मिक जीवन के मार्ग पर चलने नहीं देते तथा प्रभु-भक्ति में बाधक बन जाते हैं। भक्त जी का कहना है कि परमात्मा का नाम पढ़ा-सुना तो जाता है तथा उस पर विचार भी किया जाता है परंतु काम, क्रोध, अहंकार, निंदा आदि अवगुणों के प्रभाव के कारण मन की भावनाओं का प्रभु के साथ स्पर्श ही नहीं होता। जब तक लोहा पारस के साथ न छुए तब तक शुद्ध सोना नहीं बन सकता :

-पड़ीऐ गुनीऐ नामु सभु सुनीऐ अनभउ भाउ न दरसै ॥
लोहा कंचनु हिरन होइ कैसे जउ पारसहि न परसै ॥
देव संसै गांठि न छूटै ॥
-काम क्रोध माइआ मद मतसर इन पंचहु मिलि लूटे ॥ *(पन्ना ९७३)*
इन पंचन मेरो मनु जु बिगारिओ ॥
पलु पलु हरि जी ते अंतरु पारिओ ॥
(पन्ना ७१०)

माया का मोह लोभ का कारण बनता है तथा लोभी मनुष्य ईर्ष्यालु हो जाता है। ईर्ष्या के प्रभाव से वह निंदक बन जाता है। निंदा एक ऐसा अवगुण है जो आत्मिक जीवन को नष्ट कर देती है। भक्त रविदास जी विस्तार से समझाते हैं कि गुरमुखों की निंदा करने वाला मनुष्य संसार-सागर से पार नहीं हो सकता। वह हमेशा नरक में पड़ा रहता है। यदि कोई मनुष्य अठसठ तीर्थों का स्नान भी कर ले, बारह शिवलिंगों की पूजा भी कर ले, लोगों के कल्याण के लिए कुएं-तालाब आदि खुदवाये परंतु यदि वह निंदा करने में लगा रहता है तो उसका समस्त उद्यम व्यर्थ ही जाता है। इसी प्रकार तीर्थ-स्नान, ब्राह्मणों को दान, समस्त स्मृतियों का सुनना, ठाकुरों को भोग लगाना, भूमि-दान करना, यहां तक कि अपना नुकसान करके दूसरों का कार्य करना भी संत के निंदकों के लिए लाभदायक नहीं होता :

जे ओहु अठसठि तीरथ न्हावै ॥
जे ओहु दुआदस सिला पूजावै ॥
जे ओहु कूप तटा देवावै ॥
करै निंद सभ बिरथा जावै ॥१॥
साध का निंदकु कैसे तरै ॥
सरपर जानहु नरक ही परै ॥१॥ रहाउ ॥
जे ओहु ग्रहन करै कुलखेति ॥
अरपै नारि सीगार समेति ॥

सगली सिंम्रिति स्रवनी सुनै ॥
करै निंद कवनै नही गुनै ॥२॥
जे ओहु अनिक प्रसाद करावै ॥
भूमि दान सोभा मंडपि पावै ॥
अपना बिगारि बिरांना सांढै ॥
करै निंद बहु जोनी हांढै ॥३॥ (पन्ना ८७५)

साधसंगत ही एक ऐसा स्थान है जहां मन उच्च अवस्था में पहुंच सकता है तथा पर-निंदा, अज्ञानता, झूठ आदि विकारों का त्याग कर सकता है।

संक्षेप में कह सकते हैं कि भक्त रविदास जी के विचारानुसार इस क्षणभंगुर संसार में विचरण करते हुए शारीरिक मोह के चक्रव्यूह से निकलकर अपने आत्मिक जीवन को संवारने में अपना ध्यान लगाना चाहिए। सब इच्छाओं को पूर्ण करने वाली नाम रूपी मणि को जीवन का आधार बनाकर एक परमात्मा की आराधना में लगकर ही जीवन को सफल बनाया जा सकता है। जैसे अपवित्र माने जाने वाले ताड़ के वृक्ष तथा उन वृक्षों से बने हुए कागज़ों पर यदि प्रभु की सिफति सालाह लिखी जाती है और फिर उसके आगे सिर झुकाया जाता है, वैसे ही परमात्मा के नाम का सिमरन नीच कहलाये जाने वाले लोगों को सम्माननीय बना देता है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि विकारों से प्रभावित कमज़ोर मन भक्ति के कठिन मार्ग पर चलता हुआ डगमगा जाता है, इसलिए प्रभु की कृपा प्राप्त करने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए ताकि मन सदैव प्रभु की स्मृति में रहे :

राम गुसईआ जीअ के जीवना ॥
मोहि न बिसारहु मै जनु तेरा ॥ (पन्ना ३४५)

शांतचित्त से मन को एकाग्र करके जो भी सिमरन करता है, उसकी तृष्णा तथा भूख समाप्त हो जाती है। वह गांव, वह स्थान धन्य है; वह कुल भाग्यशाली है, जिसमें पैदा होकर किसी ने परमात्मा के नाम का श्रेष्ठ रस पिया है तथा इस रस में मस्त होकर विकार-वासना का ज़हर अपने अंदर से नष्ट कर दिया है :

धंनि सु गाउ धंनि सो ठाउ धंनि पुनीत कुटंब सभ लोइ ॥
जिनि पीआ सार रसु तजे आन रस होइ रस मगन डारे बिखु खोइ ॥ (पन्ना ८५८)

कविता

अदना मानस

अदना-सा मैं हूं मानस।
अगम, असीम न जानस।
कभी-कभी अधीर हो जाता।
जीवन की राह खोज न पाता।
मरने का है डर डराता।
उदासीन होकर रह जाता।
मन खोजता धीर इधर-उधर,
कोई धीर न कहूं दिलाता।
फिर शबद-शरण पूछाता।
मेरी बांह पकड़ लीजे बिधाता!
आपसे मांगता हूं मैं दानिश।
मामूली, छोटा मैं अल्प मानस।
दया-कृपा कीजिए मेहरबाना!
मेरा भय-रोग आप ही मिटाना।

-डॉ. सुरिंदरपाल सिंघ, पत्तण वाली सड़क, पुराना शाला, गुरदासपुर-१४३५२१, फोन : ९४१७१-७५८४६

कहि रविदास छूटिबो कवन गुन

-डॉ. सत्येंद्रपाल सिंघ*

भक्त रविदास जी सामाजिक-आध्यात्मिक यथार्थ के बड़े सशक्त पैरोकार और प्रवक्ता थे, जिन्होंने तमाम दबावों और विरोधाभासों के बावजूद भी सच कहने का साहस दिखाया। कदाचित इसी कारण उनकी बाणी को श्री गुरु ग्रंथ साहिब में स्थान मिला। सच के जिस धरातल को तलाश कर गुरु साहिबान ने समाज की सदियों से स्थापित मान्यताओं और भ्रमों को धराशायी किया उसी धरातल पर भक्त रविदास जी भी खड़े दिखते हैं। गुरु साहिबान ने लोगों से सीधा संवाद स्थापित किया और भक्त रविदास जी एवं अन्य भक्तों ने भी, जिनकी बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सम्मिलित की गयी है। भक्त रविदास जी ने मनुष्य की सारी व्यथाओं के मूल में उसके अहम की पहचान की और कहा कि यही बात मनुष्य की समझ में नहीं आती। उसके दुखों का कारण उसका दंभ ही है :

तुझहि सुझंता कछू नाहि ॥
पहिरावा देखे ऊभि जाहि ॥
गरबवती का नाही ठाउ ॥
तेरी गरदनि ऊपरि लवै काउ ॥१॥
तू कांइ गरबहि बावली ॥
जैसे भादउ खूंबराजु तू तिस ते खरी उतावली ॥

(पन्ना ११९६)

भक्त रविदास जी ने कहा कि मनुष्य के सिर पर काल मंडरा रहा है मगर उसे ख़बर नहीं है। वह बाहर के दिखावों में ही व्यस्त है। कुछ पा लेने पर वह शीघ्र ही गुमान करने लगता है किंतु उसे पता नहीं है कि उसका अहंकार भादों के महीने में उगने वाली खुंबों की तरह अल्प समय में ही नष्ट हो जायेगा। ऐसे मनुष्य को भक्त रविदास जी ने महा अज्ञानी कहा है जो निरर्थक कार्यों में ही व्यस्त है।

माटी को पुतरा कैसे नचतु है ॥
देखै देखै सुनै बोलै दउरिओ फिरतु है ॥१॥ रहाउ ॥
जब कछु पावै तब गरबु करतु है ॥
माइआ गई तब रोवनु लगतु है ॥

(पन्ना ४८७)

ऐसे अज्ञानी मनुष्य की अवस्था का वर्णन करते हुए भक्त जी ने कहा कि वह तो नष्ट होने वाले पुतले की तरह है और जीवन की भागदौड़ में फंसा हुआ है। जब उसके अनुकूल हो जाता है तो अहंकार करने लगता है, जब अनुकूल नहीं होता तो विलाप करता है। इस तरह वो अपने जीवन को गंवा देता है। मनुष्य की स्थिति तो पशु-पक्षियों से भी गई गुज़री है :

म्रिग मीन भ्रिंग पतंग कुंचर एक दोख बिनास ॥
पंच दोख असाध जा महि ता की केतक आस ॥१॥
माधो अबिदिआ हित कीन ॥
बिबेक दीप मलीन ॥१॥ रहाउ ॥
त्रिगद जोनि अचेत संभव पुंन पाप असोच ॥
मानुखा अवतार दुलभ तिही संगति पोच ॥

(पन्ना ४८६)

भक्त रविदास जी उपरोक्त वचन में मनुष्य की स्थिति का बड़ा ही सूक्ष्म और सटीक विश्लेषण करते हैं। वे कहते हैं कि हिरन,

*ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन: ९४१५९-६०५३३

मछली, भंवरा, पतंगा और हाथी इन सभी के पतन का कारण इनका एक-एक दोष बनता है। हिरन को नाद का रस है जिसके पीछे भागते-भागते उसकी मृत्यु तक हो जाती है। मछली का पानी से मोह उसके जीवन का हरण कर लेता है। भंवरा फूल की सुगंध के कारण उसमें बंद होकर मारा जाता है और पतंगा दीपक-लौ में जल मरता है। काम का रस हाथी की जान ले लेता है। मनुष्य तो पांच विकारों से घिरा हुआ है, उसका क्या हाल होगा? अज्ञानता के कारण उसकी बुद्धि मलिन हो गयी है। अन्य जीव तो विवेक, चेतना के अभाव में सुमार्ग पर नहीं चल पाते किंतु बुद्धि वाला मनुष्य कुसंग के कारण अपने दुर्लभ मानव-जीवन को निष्काम कर देता है। वह कुएं में घिरे हुए मेंढक की तरह हो जाता है जिसे सत्-असत् में कोई भेद नहीं जान पड़ता :

कूपु भरिओ जैसे दादिरा कछु देसु बिदेसु न बूझ ॥
ऐसे मेरा मनु बिखिआ बिमोहिआ कछु आरा पारु न सूझ ॥१॥
सगल भवन के नाइका इकु छिनु दरसु दिखाइ जी ॥१॥ रहाउ ॥
मलिन भई मति माधवा तेरी गति लखी न जाइ ॥
करहु क्रिपा भ्रमु चूकई मै सुमति देहु समझाइ ॥२॥
जोगीसर पावहि नही तुअ गुण कथनु अपार ॥
प्रेम भगति कै कारणै कहु रविदास चमार ॥
(पन्ना ३४६)

भक्त रविदास जी ने कहा कि मनुष्य का मन विषय-विकारों में ऐसा रम जाता है कि उसे कुछ भी उचित-अनुचित नहीं सूझता। उसकी मलिन बुद्धि उसे परमात्मा से दूर कर देती है। परमात्मा की कृपा ही उसे विकारों से ऊपर उठा सकती है और ज्ञान की राह दिखा सकती है। परमात्मा को पाने के लिए किसी बड़े जप-तप की आवश्यकता नहीं है। उसकी कृपा तो बस प्रेम-भाव से ही प्राप्त हो जाती है।

अनिक जतन निग्रह कीए टारी न टरै भ्रम फास ॥
प्रेम भगति नही ऊपजै ता ते रविदास उदास ॥
(पन्ना ३४६)

जिसने परमात्मा से प्रेम नहीं किया उसे जीवन में निराश ही होना पड़ता है। परमात्मा का संग करने में ही उद्धार है :

तुम चंदन हम इरंड बापुरे संगि तुमारे बासा ॥
नीच रूख ते ऊच भए है गंध सुगंध निवासा ॥१॥
माधउ सतसंगति सरनि तुम्हारी ॥
हम अउगन तुम्ह उपकारी ॥१॥ रहाउ ॥
तुम मखतूल सुपेद सपीअल हम बपुरे जस कीरा ॥
सतसंगति मिलि रहीऐ माधउ जैसे मधुप मखीरा ॥
(पन्ना ४८६)

परमात्मा से प्रेम किस तरह की भावना धारण करके किया जाए इसका संकेत उपरोक्त वचन में भक्त रविदास जी ने दिया है। वे कहते हैं कि परमात्मा का संग चाहिए तो अपने अवगुणों को स्वीकार करके विनम्र-भाव से उसकी शरण में जाना चाहिए। वह उबार लेता है; हमारे अवगुणों को क्षमा कर देता है। उसकी शरण में ही हित है। उससे प्रेम करके ही जीवन सफल है।

प्रेम की जेवरी बाधिओ तेरो जन ॥
कहि रविदास छूटिबो कवन गुन ॥(पन्ना ४८७)

परमात्मा के प्रेम के बंधन में बंधे रहने में ही हित है। इस बंधन से छूटने में कोई लाभ नहीं है। बंधन में वही बंधता है जो स्वयं को दीन जान लेता है और शक्तिशाली का दासत्व स्वीकार कर लेता है। दीनता का भाव ही मनुष्य को उच्चता की ओर ले जाता है। दीन होकर मनुष्य को याचना करनी चाहिए कि

परमात्मा उसे सत् के मार्ग पर चलने की पूर्ण सामर्थ्य प्रदान करे :

हम सरि दीनु दइआलु न तुम सरि अब पतीआरु किआ कीजै ॥
बचनी तोर मोर मनु मानै जन कउ पूरनु दीजै ॥ (पन्ना ६९४)

भक्त रविदास जी ने परमात्मा के प्रेम की विधि बताते हुए कहा कि चेतना में परमात्मा का स्मरण हो, आंखों में सदैव उसका स्वरूप हो, कानों से बस, उसकी महिमा सुनें और मन भंवरा बनकर उसके चरण-कमलों के पास मंडराता रहे, जिह्वा पर सदैव उसके गुणों का ज्ञान रहे :

चित सिमरनु करउ नैन अविलोकनो स्रवन बानी सुजसु पूरि राखउ ॥
मनु सु मधुकरु करउ चरन हिरदे धरउ रसन अंम्रित राम नाम भाखउ ॥१॥
मेरी प्रीति गोबिंद सिउ जिनि घटै ॥
मै तउ मोलि महगी लई जीअ सटै ॥(पन्ना ६९३)

जिस प्रेम की बात भक्त रविदास जी ने की उसे बहुत ही अमूल्य बताया और कहा कि इतनी महंगी पायी हुई इस प्रीति को कैसे गंवा दें? गुरु साहिबान ने जिस तरह प्रचलित धार्मिक आडंबरों और कर्मकांडों पर गहरी चोट करते हुए परमात्मा से मिलने की सरल राह दिखाई, जिस पर हर कोई चल सकता था, भक्त जी ने भी ठीक वैसी ही बात की।

प्राचीन काल में आरती परमात्मा की उपासना का एक विशेष अंग थी जिसे बड़ी ही विधि से किया जाता था और हर कोई इसे कर भी नहीं सकता था। आरती में विशेष सामग्री का प्रयोग होता था जिसे पवित्र माना जाता था। आरती का प्रचलन आज भी है। भक्त रविदास जी ने इस विधि और इसे करने के विशेषाधिकार को भी तोड़ने की बात की, जैसा कि गुरु नानक साहिब ने किया था। उन्होंने आरती का आधार परमात्मा के नाम को बनाया।

नामु तेरो आरती मजनु मुरारे ॥
हरि के नाम बिनु झूठे सगल पासारे ॥१॥ रहाउ ॥
नामु तेरो आसनो नामु तेरो उरसा नामु तेरा केसरो ले छिटकारे ॥
नामु तेरा अंभुला नामु तेरो चंदनो घसि जपे नामु ले तुझहि कउ चारे ॥१॥
नामु तेरा दीवा नामु तेरो बाती नामु तेरो तेलु ले माहि पसारे ॥
नाम तेरे की जोति लगाई भइओ उजिआरो भवन सगलारे ॥
नामु तेरो तागा नामु फूल माला भार अठारह सगल जूठारे ॥ (पन्ना ६९४)

परमात्मा का स्मरण ही उसकी आरती है। उसके नाम का ही आसन बनाकर स्थान धारण करें। नाम का ही केसर बनाकर छींटें दें। नाम के जल में ही नाम के चंदन को घिसें और नाम का दीया-बाती कर नाम का ही तेल डालें। नाम को ही फूल-माला बनायें। भक्त रविदास जी ने प्रचलित आरती को निपट ढोंग बताया और कहा कि परमात्मा के स्मरण से ही आरती सम्पन्न हो जाती है अर्थात् मन में परमात्मा को धारण करना ही सच्ची विधि है परमात्मा की उपासना की।

समाज के हर वर्ग को समान रूप से परमात्मा के साथ जोड़कर भेदभाव मिटाना और निम्न माने जाने वालों को बराबर का सम्मान दिलाना, वह भी नितांत सरल और सहज रूप से, एक महान लक्ष्य था, जिसे भक्त रविदास जी ने प्राप्त किया। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सम्मिलित भक्त रविदास जी की बाणी आज के संदर्भ में भी पूर्णत: प्रासंगिक है। ☸

भक्त रविदास जी की बाणी : मानव जीवन का आदर्श

-डॉ. मधु बाला*

भक्तिकालीन निर्गुण धारा के संतों-भक्तों में भक्त रविदास जी का विशेष स्थान है। उन्होंने अपने जीवन के अनुभव को शब्दों में वर्णित करके मनुष्य को उपदेश भी दिया है तथा प्रेरणा भी। इस संसार में गुरु के बिना कोई भी अन्य व्यक्ति परमात्मा से साक्षात्कार करवाने में समर्थ नहीं है। मनुष्य और प्रभु के मिलाप में मनुष्य के पांच विकार-- काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार ही सबसे बड़े बाधक हैं। इन पांच में से एक अकेला विकार ही नाश का कारण बन जाता है। भक्त रविदास जी फरमान करते हैं कि हिरण नाद-रस अर्थात् संगीत ध्वनि के कारण शिकारी का शिकार बन जाता है। मछली जल का जीव है, अत: जल के बिना नहीं रह सकती। भंवरा पुष्प-रस का लोभी होता है। यही उसकी खुराक है और यही गंध-रस उसकी मृत्यु का कारण बनता है, जब वह फूल में ही बंद हो जाता है। पतंगा रोशनी के कारण नष्ट हो जाता है तथा हाथी काम-वासना से तबाह हो जाता है। इस प्रकार इनमें विद्यमान एक-एक विकार ही इनके जीवन का अंत करने वाला है। उस मनुष्य की क्या दशा होगी जिसमें ये पांचों विकार मौजूद हैं ?

म्रिग मीन भ्रिंग पतंग कुंचर एक दोख बिनास ॥
पंच दोख असाध जा महि ता की केतक आस ॥
(पन्ना ४८६)

पांच विकारों के वशीभूत होने का कारण मनुष्य की अज्ञानता है। हे प्रभु! मनुष्य अविद्या से प्रेम करने लगा है, अविद्या (भौतिकता, सांसारिकता, इहलौकिकता) के प्रति आसक्त है। इसी के कारण मनुष्य विचारहीन बन जाता है, विवेकहीन हो जाता है अर्थात् जो व्यक्ति उचित-अनुचित, पाप-पुण्य, अच्छा-बुरा आदि समझने में असमर्थ होता है। वह अविद्या से मुक्त कहलाता है। तीन प्रकार की योनियां (भूमज, स्वेदज, अंडज) विवेकहीन हैं। मनुष्य जन्म दुर्लभ है। ऐसा दुर्लभ जीवन पाकर भी जीव पांच विकारों में भ्रमित रहता है, कुसंग को अपनाता है। कुसंग अर्थात् बुरी संगत से अभिप्राय है-- विकारों के प्रति आसक्ति। विकारों की अनासक्ति से ही मनुष्य ज्ञान प्राप्त कर सकता है तथा विकारों के प्रति लगाव ही मनुष्य को मानसिक अंधकार की तरफ ले जाता है :

माधो अबिदिआ हित कीन ॥
बिबेक दीप मलीन ॥१॥ रहाउ ॥
त्रिगद जोनि अचेत संभव पुंन पाप असोच ॥
मानुखा अवतार दुलभ तिही संगति पोच ॥
(पन्ना ४८६)

यह प्रश्न प्राणी के मन में बहुत बार उत्पन्न होता है कि हम संसार में क्यों आते हैं? कैसे आते हैं? इसका सरल-सा उत्तर भक्त रविदास जी ने दिया है कि हम अपने कर्मों के वशीभूत होकर ही संसार में जन्म लेते हैं। जो व्यक्ति सभी कामनाओं का त्याग करके प्रभु-दर्शन में ही अपना मन लगा लेता है, उसी को जीवन-मुक्ति प्राप्त होती है तथा उसकी कोई भी कामना शेष नहीं रहती। यही कामनाएं और इच्छाएं ही मनुष्य के पुनर्जन्म का कारण बनती है। अत: आवश्यक है कि जीव संसार में

*आई-१०९, गली नं: ५, मजीठीआ इन्कलेव, पटियाला-१४७००५, फोन ९९१४१-९०७२४

अनासक्तिपूर्ण जीवन व्यतीत करे, भ्रमों का त्याग करे तथा गुरु के उपदेशानुसार ही सत्य की पहचान करे। केवल यही उपाय है जिसके द्वारा भगवान अपने भक्तों का भय हरण करता है :

जीअ जंत जहा जहा लगु करम के बसि जाइ ॥
काल फास अबध लागे कछु न चलै उपाइ ॥
रविदास दास उदास तजु भ्रमु तपन तपु गुर गिआन ॥
भगत जन भै हरन परमानंद करहु निदान ॥
(पन्ना ४८६)

गुरु के उपदेश से ही जीव को प्रभु की प्राप्ति हो सकती है। संत-जनों को प्रभु का शरीर तथा उनकी संगत को प्राण माना गया है। भक्त रविदास जी फरमान कर रहे हैं कि हे प्रभु! मुझ पर इतनी कृपा करो कि मुझ में संत समान आचरण करने का सामर्थ्य आ जाए। संत-मार्ग पर मेरे कदम अग्रसर रहें। संत नहीं तो संतों के सेवकों की सेवा ही मुझे प्रदान कर दीजिए ताकि मैं भी उन सेवकों के माध्यम से संत-महिमा से परिचित हो सकूं :

संत तुझी तनु संगति प्रान ॥
सतिगुर गिआन जानै संत देवा देव ॥१॥
संत ची संगति संत कथा रसु ॥
संत प्रेम माझै दीजै देवा देव ॥१॥ रहाउ ॥
संत आचरण संत चो मारगु संत च ओल्हग ओल्हगणी ॥ (पन्ना ४८६)

भक्त रविदास जी प्रभु से एक और वस्तु मांगते हैं-- असंत और पापी लोगों की असंगति। असंत का संग सात्त्विक गुणों को नष्ट कर देता है। जैसे दूषित होने से रत्नों की गुणवत्ता में कमी आने के कारण उनका मूल्य कम हो जाता है, ऐसे ही संत की संगत के साथ-साथ असंतों का संग करने से दुर्गुण भी उत्पन्न हो जाते हैं और भक्ति की शक्ति समाप्त हो जाती है। भक्त रविदास जी के अनुसार संत और परमात्मा में कोई भेद नहीं होता है। यदि मन में परमात्मा है तो 'मैं' नहीं रहती। 'मैं' से मतलब 'अभिमान' होता है। प्रेमपूर्ण हृदय में ही परमात्मा का वास होता है :

अउर इक मागउ भगति चिंतामणि ॥
जणी लखावहु असंत पापी सणि ॥
रविदासु भणै जो जाणै सो जाणु ॥
संत अनंतहि अंतरु नाही ॥ (पन्ना ४८६)

संत की समानता चंदन से दर्शायी है। जैसे चंदन के वृक्ष अपने आस-पास के सभी कड़वे, कसैले तथा गंधहीन पेड़ों को भी अपनी सुगंधि प्रदान करके अपने जैसा ही बना लेते हैं ठीक उसी प्रकार संत अपनी अच्छाइयों के कारण, सद्गुणों के कारण अपने पास आए व्यक्ति को भी प्रभावित करते हैं तथा उसे अपने जैसा ही बना लेते हैं। भक्त रविदास जी ने स्वयं को एरंड तथा संत को चंदन माना है। हे परमात्मा! मैं सतसंगत की शरण में हूं। मुझ में बहुत-से अवगुण हैं। आप ही उपकार करने वाले हो। आप सफेद, मुलायम रेशम के समान हो तथा हम कठोर काले पत्थर के समान हैं। परमात्मा सर्वसमर्थ है, योग्य है तथा जीव सर्वथा अयोग्य है :

तुम चंदन हम इरंड बापुरे संगि तुमारे बासा ॥
नीच रूख ते ऊच भए है गंध सुगंध निवासा ॥१॥
माधउ सतसंगति सरनि तुम्हारी ॥
हम अउगन तुम्ह उपकारी ॥१॥ रहाउ ॥
तुम मखतूल सुपेद सपीअल हम बपुरे जस कीरा ॥
(पन्ना ४८६)

भक्त रविदास जी कहते हैं कि हमें संत की संगत उसी प्रकार करनी चाहिए जैसे शहद के साथ मधु-मक्खियां चिपकी रहती हैं। जीव अपने जन्म से नहीं कर्मों से नीचता को प्राप्त होता है। जीव का जन्म लेना उसके अपने वश में नहीं होता। जैसे कर्म होंगे उसी के अनुरूप उसे जन्म लेना पड़ता है। यदि नीच मानी जाती कुल

(शेष पृष्ठ १९ पर)

हज़ारों सिक्ख शहीदों की गौरव-गाथा : बड़ा घल्लूघारा

*-स. बिकरमजीत सिंघ**

सिक्ख कौम का सारा इतिहास संघर्ष और कुर्बानियों से भरा पड़ा है। इन्हीं संघर्षों के चलते सिक्ख पंथ में दो 'घल्लूघारे' घटित हुए। इन घल्लूघारों के घटित होने का उद्देश्य केवल सिक्ख कौम को पूरी तरह से नेसतो-नाबूद करना था। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का सजाया खालसा पंथ दुश्मनों ने कई बार ख़त्म करना चाहा मगर यह और भी ज्यादा प्रफुल्लित होता गया। बेशक इन घल्लूघारों में सिक्खों का काफी जानी-माली नुकसान होता रहा, सिक्ख घर से बेघर होते रहे परंतु सिक्खों ने कभी भी ज़ालिमों और जुल्म के खिलाफ़ चलते हुए अपनी नीतियों को नहीं बदला।

पंजाब के इतिहास में 'घल्लूघारा' शब्द सिक्खों की ही कुर्बानियों की याद दिलाता है। विद्वानों के मुताबिक 'घल्लूघारा' शब्द असल में यूनानी भाषा के शब्द : HOLOCAUSTRUM से निकला है, जिसका भाव है BURNT WHOLE, जिसके शाब्दिक अर्थ हैं : सब कुछ तबाह कर देना। डॉ. रतन सिंघ (जग्गी) 'सिक्ख पंथ विशव कोश' में 'घल्लूघारा' के अर्थ तबाही, बर्बादी एवं सर्वनाश करते हैं।

'घल्लूघारा' शब्द अंग्रेजी भाषा के HOLOCAUST शब्द के समानांतर है। सिक्ख इतिहास में घटित घल्लूघारों में 'छोटा घल्लूघारा' ज़िला गुरदासपुर के काहनूंवान नामक स्थान पर सन् १७४६ ई में घटित हुआ। इसमें लगभग १० हज़ार सिक्ख शहीद हुए। १७६२ ई में 'बड़ा घल्लूघारा' कुप्प-रुहीड़ (रुहीड़ा) नामक स्थान पर घटित हुआ। इसमें लगभग ३० हज़ार सिक्ख शहीद हुए।

५ फरवरी, १७६२ ई को घटित बड़ा घल्लूघारा अहमद शाह अब्दाली की सेना और सिक्खों के दरमियान हुआ। यह हमला सिक्खों का नामो-निशान मिटाने की गहरी साजिश थी, जो कि 'बड़े घल्लूघारे' के रूप में घटित हुई। असल में अहमद शाह अब्दाली जनवरी, १७६१ ई में मराठों को हराकर हिंदोस्तान का धन-माल लूटकर और हिंदोस्तानी लड़कियों को ज़बरदस्ती बंदी बनाकर अपने साथ ले जा रहा था। उस समय सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया की कमान तले सिंघों ने गोइंदवाल साहिब के समीप ब्यास दरिया के तट पर अब्दाली पर हमला करके उसके द्वारा लूटा हिंदोस्तान का बहुत सारा माल-असबाब छीन लिया। साथ ही गुरु के दिलेर सिंघों ने हिंदोस्तानियों की बंदी बनाई बहू-बेटियों को भी छुड़ाया। सिक्खों से करारी पराजय खाकर अब्दाली अपने मुल्क लौट गया। खालसा फौज ने सभी छुड़वाई गई २२०० स्त्रियों को वापिस उनके घर पहुंचाया।

२७ अक्तूबर, १७६१ ई को बंदी छोड़ दिवस के अवसर पर श्री अकाल तख़्त साहिब, श्री अमृतसर पर सरबत्त खालसे की एकत्रता बुलाई गई, जिसमें देश-कौम की रक्षा, पंथ की चढ़दी कला और देश को विदेशी हमलावरों के हमलों से बचाने हेतु ठोस नीतियां बनाई गईं। इन नीतियों के तहत सबसे पहले यह फैसला लिया गया कि जो देश के गद्दार विदेशी हकूमतों के साथ मिलकर सिक्खों की सभी गतिविधियों की ख़बरें उन तक पहुंचाते हैं उनको सबक सिखाया जाए।

**२९४६/७, बाज़ार लुहारां, चौंक लछमणसर, श्री अमृतसर-१४३००१; फोन : ८७२७८००३७२*

इन गद्दारों में सबसे पहला नाम श्री अमृतसर के समीप लगते कसबा जंडियाला के रहने वाले महंत आकल दास का था, जो कि अब्दाली को खालसा पंथ की सभी ख़बरें पहुंचाता था।

महंत आकल दास को खालसा दरबार में पेश होने का संदेश भी भेजा गया परंतु वह हाज़िर न हुआ। इसके चलते सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया ने फौज लेकर महंत आकल दास को जंडियाला में घेर लिया। महंत आकल दास ने अपने बचाव और अहमद शाह अब्दाली को सिक्खों के हाथों मिली पिछली हार का बदला लेने के लिए सिक्खों पर हमला करने के लिए भड़काया। इसके अलावा मालवा क्षेत्र का सूबेदार ज़ैन ख़ान भी सिक्खों की बढ़ती ताकत को देखकर उनसे काफी खफ़ा था। उसने भी अब्दाली को सिक्खों पर हमला करने के लिए उकसाया। अब्दाली पहले से ही सिक्खों से हुई अपनी पराजय के कारण उनसे बदला लेना चाहता था। उसने मुखबिरों का संदेश मिलते ही सिक्खों पर हमला करने की तैयारी कर दी।

सिक्खों को जब इस बात का पता चला कि अब्दाली ने हिंदोस्तान की तरफ कूच करना है तथा उसकी नीयत उन पर हमला करने की है तो सबसे पहले सिक्खों ने जंडियाला छोड़ अपने परिवारों को सुरक्षित स्थान पर ले जाने हेतु उन्हें सतलुज पार पहुंचाने की तैयारी कर ली।

सिक्खों को अनुमान था कि अब्दाली को आने में अभी कुछ दिन लग जाएंगे, जिससे वे अपने परिवारों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाने में सफल हो जाएंगे मगर अब्दाली की फौज उनके अनुमान के विपरीत बड़ी तेज़ी से हिंदोस्तान में प्रवेश कर ३ फरवरी, १७६२ ई को लाहौर पहुंच गईं। लाहौर से अब्दाली जब मार-धाड़ करता हुआ जंडियाला पहुंचा तो उसे सरहिंद के सूबेदार जैन ख़ान, लछमी दास और मलेरकोटला के अफगान भीखण खां ने खालसा फौज के मालवा क्षेत्र की तरफ आने की ख़बर दी और खुद भी अपनी फौजों के साथ सिक्खों पर हमला करने के लिए अब्दाली के साथ हो लिए।

सिक्ख ज़िला संगरूर की तहसील मलेरकोटला के गांव कुप्प-रुहीड़ के जंगलों में ही पहुंचे थे कि अब्दाली भी उनका पीछा करता हुआ मात्र दो दिन में ही लाहौर से जंडियाला और जंडियाला से मलेरकोटला पहुंच गया। भीखण खां, जैन खां और मुर्तज़ा खां को साथ लेकर ५ फरवरी, १७६२ ई को प्रातः काल ही गुपचुप ढंग से अब्दाली की सेना ने सिक्खों के काफिले पर हमला कर दिया। सिक्ख जंग के लिए पूरी तरह तैयार नहीं थे। प्रातः काल का समय होने के कारण कोई सिक्ख दसतार सजा रहा था तो कोई नित्तनेम करने में व्यस्त था। इस बारे में ज्ञानी गिआन सिंघ 'पंथ प्रकाश' में लिखते हैं :

नहित ड़े सुचेते सजे दसतारे।
आन कवेले परे कितते तब सिंघ कहो गिलजे गुर मारे।
औड़क शीघर सिंघ झटापट त्यार भए हित जंग अपारे।
अगर होइ लगे लरने सिंघ तुपक तीर चलाइ कराए। (पृष्ठ १५२)

अब्दाली की सेना का हमला होते ही सिक्खों ने अपनी पोज़ीशनें संभाल लीं और डट कर सामना करने लगे। सिक्खों के परिवार साथ होने के कारण उन्हें स्त्रियों, बच्चों एवं बुजुर्गों को संभालने की भी चिंता थी। फिर भी सिक्खों ने हमलावरों का सामना करते हुए अपने परिवारों को एक जगह एकत्र कर उनको घेरे में ले लिया। किलानुमा घेराबंदी करके उनको अपनी सुरक्षा प्रदान की और लड़ते-लड़ते आगे भी बढ़ने लगे :

बहीर छड सिंघ दूर न जावै, आप फतेह और बहीर बचावै।(श्री गुर पंथ प्रकाश, पृष्ठ ४५९)

सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया की कमान में सभी मुख्य सिक्खों ने दुश्मनों का बहुत दिलेरी और हिम्मत से मुकाबला किया। लगातार हो रहे घमासान युद्ध में अब्दाली ने अपने जरनैल जहान ख़ान को सिक्खों द्वारा बनाए घेरे को तोड़ने के लिए पूरी शक्ति लगाने को कहा परंतु सरदार जस्सा सिंघ और स. चढ़त सिंघ बनाए घेरे को सुरक्षा प्रदान करते हुए टूटने नहीं दे रहे थे। इसी जद्दोजहद में सिक्ख बनाए घेरे में अपने परिवारों को बचाते हुए कुतबा और बाहमणी गांवों तक ले गए। यह सारा इलाका भी मलेरकोटला वाले पठानों का था, जिस कारण वहां के रंगड़ भी सिक्खों पर टूट पड़े :

कुतबो बाहमणी थी कहत ऊहा पिंड को नाम।
बहुत बहीरीए तहिं वड़े देख सु वसते गान ॥२५॥
चौपई। रय्यत हुती पठाणन केरी, लीए मलेरीअन तहिं वै घेरी।
तिन्है ग्राम लोकन कहि दीयो, मार लूट उन सिंघन लीयो ॥२६॥ (श्री गुर पंथ प्रकाश, पृष्ठ ४६१)

दोनों तरफ से बहुत ज्यादा जानी नुकसान हो रहा था। जहां सिक्ख शहीद हो रहे थे, वहीं अब्दाली की फौज के सिपाहियों की लाशों के ढेर भी लगते जा रहे थे। कुतबा-बाहमणी गांव के समीप एक पानी की ढाब थी। वहां पर सिक्खों और अब्दाली की फौजों ने पानी भी पीया :

घोड़े मरद पिआसे भए, सबहन के मुख सूक सु गए।
रसते मैं जल हत्थ न आयो, जौ आयौ तौ पीअन कब पायो ॥१३३॥
कोस बारां में नहिं जल लभा, पीतो दुतरफी चाहै सभा।
सभ को जल तहिं नदरी आया, जन मरते किन जीवन पाया ॥१३४॥
भरी दाब बड दोवै नट्ठ, पयासे परे दुतरफों नट्ठ।
बहीरीए भी चहैं पीओ पानी, परत तलवार न तिन ने मानी ॥१३५॥
गिलजे भी लड़नों भुल गए पीवन पानी ढाब सु पए।
पयासे विचदों नट्ठ जल पीवैं, भावैं मर डुब भावैं जीवैं ॥१३६॥ (श्री गुर पंथ प्रकाश, पृष्ठ ४६१)

सिक्खों की फौज अब्दाली की सेना को मुंह तोड़ जवाब देती हुई तथा अपने साथियों की कीमती जानें कुर्बान करती हुई लगातार आगे बढ़ती जा रही थी। भले ही इस हमले में सिक्खों का भारी मात्रा में जानी-माली नुकसान हुआ, जिसमें स्त्रियां, बुज़ुर्ग एवं बच्चे भी शामिल थे, मगर वे अब्दाली के सिक्खों का सर्वनाश करने के इरादे को असफल बनाने में सफल रहे। सिक्ख बरनाला की तरफ सुरक्षित स्थान पर पहुंच गए और अब्दाली की सेना थक-हारकर वापिस लौट गई। उस समय यह बात सही साबित हो रही थी कि सिक्खों को मार-मुकाने वाले तो ख़त्म हो गए मगर सिक्ख अपने अदम्य साहस के साथ आज भी दुनिया के नक़्शे पर अपना स्थान बनाए हुए हैं।

बड़े घल्लूघारे में कुल कितने सिक्ख शहीद हुए इस बारे में अलग-अलग अनुमान हैं। डॉ. रतन सिंघ (जग्गी) इस घल्लूघारे में शहीद होने वाले सिक्खों की गिनती १२ से ५० हज़ार तक बताते हैं। 'श्री गुर पंथ प्रकाश' के कर्ता भाई रतन सिंघ (भंगू) बड़े घल्लूघारे में तीस हज़ार सिक्खों के शहीद होने का वर्णन करते हैं :

-लोक कहैं सिंघ इक लख सारा,
पचास बचयो और सभ गयो मारा ॥१४३॥
पिता हमारे तीस बताए, रहे सु मर और बच कर आए।
पिता चाचे दुइ हम थे साथ, उन ते सुन हम आखी बात ॥१४४॥
घोड़े ऊठ की गिणती नांहि, घल्लूघारे इसकै मांहि।
कोऊ घट कोऊ आखै जादा, इतनक हम पित कही मिरयादा ॥१४५॥
-सरदार सबै जख़्मी भए साबत रहयो न केइ।

लई शहीदी थी घनन, गिणती सभन न होइ ॥१४७॥

बड़े घल्लूघारे में स. जस्सा सिंघ अहलूवालिया के शरीर पर २२ और स. चढ़त सिंघ के शरीर पर अनगिनत ज़ख्म लगे :

-ज़खम बहुत जस्सा सिंघ खाए,
तीर गोली औ तेग घाइ आए।. . .
जस्सा सिंघ खाए बाई घाइ, तौ भी सिंघ जी लड़तो जाइ।. . .
चढ़ (चढ़त) सिंघ ज़खम गिणे ना जाए, तीर तलवारन जो नेजे खाए। *(पृष्ठ ४५७)*

सिक्खों के हुए इस बड़े जानी नुकसान को देखते हुए अहमद शाह अब्दाली यह समझता था कि अब सिक्ख कभी भी उभरकर सामने नहीं आ सकेंगे, मगर खंडे की धार में से निकला 'खालसा पंथ' श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के छकाए अमृत की ताकत से शारीरिक और मानसिक रूप से इतना बलवान हो चुका था कि कुछ ही महीनों बाद सिक्ख और भी ज्यादा चढ़दी कला में विचरने शुरू हो गए। सिक्खों ने अपनी शक्ति को दोबारा संगठित कर लिया और कुछ ही महीनों में सरहिंद और लाहौर के इलाकों पर हमला करके उन पर कब्ज़ा कर लिया। ❂

भक्त रविदास जी की बाणी . . .

(पृष्ठ १५ का शेष)

में जन्म लेने के बाद भी जीव अच्छे कर्म करता है तो उसका कल्याण हो जाता है :

सतसंगति मिलि रहीऐ माधउ जैसे मधुप मखीरा ॥
जाती ओछा पाती ओछा ओछा जनमु हमारा ॥
राजा राम की सेव न कीन्ही कहि रविदास चमारा ॥ *(पन्ना ४८६)*

भवगद्-प्रेम की प्राप्ति हेतु शरीर की परवाह नहीं करनी चाहिए शरीर ने तो एक दिन नष्ट हो ही जाना है लेकिन भक्त के मन में उत्पन्न प्रेम-भाव कभी समाप्त नहीं होता। जब तक प्रभु का प्रेम है, तब तक भक्त को किसी प्रकार की भी शंका अथवा भय नहीं है। भक्त रविदास जी को परमात्मा का नाम-सिमरन करके ही प्रभु रूपी धन प्राप्त हुआ है। उनकी मनोकामना भी यही है कि उनका मन नित्यप्रति परमात्मा के चरणों में ही लगा रहे :

कहा भइओ जउ तनु भइओ छिनु छिनु ॥
प्रेमु जाइ तउ डरपै तेरो जनु ॥
तुझहि चरन अरबिंद भवन मनु ॥
पान करत पाइओ पाइओ रामईआ धनु ॥
(पन्ना ४८६)

सांसारिक पदार्थों का प्रेम-बंधन परमात्मा से दूर ले जाता है तथा परमात्मा से किया गया प्रेम-बंधन मुक्ति देने वाला है। सच्चे भक्त की यही पहचान है कि वह सांसारिक मोह-माया में नहीं फंसता। प्रभु-प्रेम की यह परिभाषा यदि कोई समझ लेता है तो वह विद्वान हो जाता है। जो प्रभु के प्रति समर्पण-भाव से भक्ति-भावना रखता है, उसकी कोई भी अन्य कामना शेष नहीं रहती। इसी भाव को भक्त रविदास जी ने इस प्रकार फरमान किया है :

संपति बिपति पटल माइआ धनु ॥
ता महि मगन होत न तेरो जनु ॥
प्रेम की जेवरी बाधिओ तेरो जन ॥
कहि रविदास छूटिबो कवन गुन ॥(पन्ना ४८६)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित भक्त रविदास जी की बाणी की महत्त्वपूर्ण पंक्तियों को जीव अपने जीवन का अंग बनाकर प्रभु-साधना के द्वारा परमात्मा तक पहुंच सकता है। भक्त रविदास जी की बाणी का एक-एक शबद प्रेरणा देने वाला तथा जीवन की सत्यता से परिचित करवाने वाला है। ❂

बड़ा घल्लूघारा

–स. गुरदीप सिंघ*

'घल्लूघारा' शब्द का सम्बंध अफगानी भाषा के साथ है। 'घल्लूघारा' का मतलब है-– सब कुछ बर्बाद हो जाना। मुगल बादशाह अहमदशाह अब्दाली २० वर्ष की आयु में बादशाह बन गया था। उसने भारत पर दस बार आक्रमण किया। वह अपने जासूसों को तंबाकू आदि का व्यापार करने के बहाने भारत भेजता, जो भारत आकर यहां का सारा भेद ले जाते। इन्हीं जासूसों के द्वारा ही बहुत सारे भारतीयों को तंबाकू की लत लग गई। उसने सन् १७६२ ई में जो आक्रमण भारत पर किया, उसका मुख्य उद्देश्य सिक्खों की शक्ति को नष्ट करना था। अब्दाली के सिक्खों पर किए गए इस आक्रमण को सिक्ख इतिहास में 'बड़ा घल्लूघारा' के नाम से याद किया जाता है। यह अब्दाली का छठा आक्रमण था। अहमदशाह अब्दाली अपने २२०० सैनिकों के साथ जनवरी, १७६२ ई में रोहतास के मार्ग से भारत में दाख़िल हुआ। अब्दाली और उसके सैनिकों के हौसले बुलंद थे क्योंकि इससे पहले जनवरी, १७६१ ई में अब्दाली ने मराठों को पानीपत की तीसरी लड़ाई में कमर-तोड़ पराजय दी थी।

तुर्कों को यदि कोई ललकारता था तो वे सिक्ख सरदार ही थे। सिक्ख अन्य धर्म के लोगों की बहू-बेटियों को मुगल सिपाहियों के कब्ज़े से छुड़ाकर सुरक्षित उनके घरों तक पहुंचा देते और लूटा हुआ माल भी मुगलों से वापिस ले आते। मुगल सिपाही सूबेदार के पास जाकर शिकायत करते। सिंघों ने कई बार मुगल सूबेदारों, जरनैलों को उल्टे पांव भगाया था। अब्दाली को सिंघों की चढ़दी कला का पता चला। उसने नूरदीन की अगुआई में पंजाब में फुर्तीली फौज भेजी, जिसका सामना चिनाब दरिया के किनारे स. चढ़त सिंघ शुकरचक्किया के साथ हुआ। ज़बरदस्त टकराव से मुगलों में भगदड़ मच गई। काफी मुगल सेना भाग कर वापिस चली गई।

सन् १७६१ की दीवाली समूचे सिक्ख पंथ ने धूमधाम से मनाई। स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया की प्रधानगी में मीटिंग हुई। गुरमते पास हुए, सिक्ख कौम की चढ़दी कला के लिए विचारें हुईं। सबको बताया गया कि जंडियाला का आकलदास मुखबिर है और वह सिक्खों की कार्यवाही की सारी रिपोर्ट सरहिंद के कमांडर जैन ख़ां को देता है। जैन ख़ां सारी सूचनाएं अब्दाली तक पहुंचाता है।

जैन ख़ां ने आकलदास के साथ मिलकर अब्दाली को सिक्खों पर हमला करने हेतु संदेश भिजवाया। सिक्खों को पता चल गया कि अब्दाली बहुत बड़ी फौज लेकर केवल सिक्खों के साथ ही युद्ध करने आ रहा है। सिक्खों का ख़्याल था कि अब्दाली चार-पांच दिनों तक आयेगा, इसलिए वे अपने परिवारों को सुरक्षित ठिकाने पर पहुंचाने हेतु सतलुज पार के क्षेत्र की ओर चल पड़े। सिक्खों के अंदाजे के विपरीत अब्दाली पंजाब दो दिन में ही पहुंच गया।

*३०२, किदवाई नगर, लुधियाना-१४१००८; फोन : ९८८८१२६६९०

सिक्खों को उसकी कार्यवाही का पता न लग सका। मलेरकोटला के जंगलों में रात के समय सिंघ विश्राम कर रहे थे। अब्दाली के सिपाहियों ने लाल रंग की वर्दी पहनी हुई थी और दूसरी तरफ केसू के पौधों पर भी लाल रंग के फूल खिले हुए थे। सुबह चार बजे का समय था। अब्दाली की सेना ने मलेरकोटला की तरफ से अचानक हमला कर दिया। सिंघों को जब दुश्मन की फौज का पता चला तो वे जत्थेदारों की अगुआई में एक तूफान की तरह उठे और जो भी हथियार या शस्त्र आदि हाथ लगे उसी से मुकाबला करने लगे। अचानक हुए इस हमले से सिंघों का काफी जानी एवं माली नुकसान हुआ। जैन ख़ां की टक्कर सरदार शुकरचक्किया के साथ हुई। अहमदगढ़ की ओर से स. जस्सा सिंघ अपने सिंघों के साथ अब्दाली के जवानों को पछाड़ रहे थे। स. राम सिंघ, स. बघेल सिंघ अपने सिंघों के साथ अब्दाली के प्रमुख जवानों से जूझ रहे थे। सिक्ख जवान जख़्मी होकर भी तन-मन से लड़ रहे थे। सिक्ख अपने परिवारों के गिर्द फौलादी दीवार बनकर डटे हुए थे। बेशक सिंघों पर हुआ यह हमला अचानक था मगर सिंघ मुकाबला करने में किसी किस्म की कसर नहीं छोड़ रहे थे। सिंघों के साथ उनके परिवार होने के कारण शहीदों में महिलाओं, बच्चों एवं बूढ़ों की संख्या सर्वाधिक थी। बचे-खुचे सिंघ काफिले के रूप में बरनाला की तरफ चले गये। इस घमासान की लड़ाई में ३०-३५ हज़ार सिंघ शहीद हो गए। सिक्ख इतिहास को नया मोड़ प्रदान करने वाली यह घटना ५ फरवरी, १७६२ ई को मलेरकोटला के निकट कुप्प रुहीड़ा की धरती पर घटित हुई। सिक्ख इतिहास में यह घटना 'बड़ा घल्लूघारा' के नाम से जानी जाती है।

स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया के शरीर पर २२ जख़्मों और स. चढ़त सिंघ के शरीर पर अनगिनत जख़्मों के निशान थे। बड़े घल्लूघारे के थोड़े समय बाद ही १७६३ ई. में सिंघों ने सरहिंद पर पुन: कब्ज़ा कर लिया। सरहिंद से लगभग ७ मील की दूरी पर स्थित गांव पीर जैन में एक ही झड़प में जैन ख़ां को मौत के घाट उतार दिया। मुखबिर आकलदास को भी मौत की नींद सुला दिया। बड़े घल्लूघारे में बेशक सिंघों का जान-माल का भारी नुकसान हुआ मगर सिंघों ने पंजाब में अब्दाली की दाल नहीं गलने दी। सिंघों के धैर्य और बुलंद हौसलों से भयभीत अब्दाली लाहौर की तरफ भाग खड़ा हुआ और बाद में अफगानिस्तान की ओर चला गया। इस प्रकार मुगल साम्राज्य की जड़ें खोखली होनी शुरू हो गईं और खालसा राज्य की पुन: सृजना के लिए आधार-भूमि तैयार हो गई। सिंघ उसी मार्ग पर चल पड़े जो सिक्ख राज्य की स्थापित की तरफ जाता था। ❁



श्री ननकाणा साहिब का खूनी साका

-प्रो प्रकाश सिंघ

गुरद्वारा प्रबंध सुधार लहर- सिंघ सभा लहर से सिक्ख संगत में यह जागृति आ गयी कि वे अपने धार्मिक रीति-रिवाज़ सिक्ख रहित मर्यादा के अनुसार करने लग गए। अपने गुरुद्वारों के प्रबंध में सुधार लाने वाले के उद्देश्य के लिए बीसवीं शताब्दी के दूसरे तथा तीसरे दशक में पंजाब के अंदर गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर चली। इसमें सिक्खों ने जिस प्रकार शांतमयी ढंग से आंदोलन किया, उसकी उदाहरण इतिहास में मिलना मुश्किल है। सिक्खों ने हज़ारों की संख्या में गिरफ्तारियां देकर जेलें भर दीं। अनेकों ने हर्षोल्लास से शहीदियां प्राप्त कीं। अंग्रेज सरकार परेशान हो गयी।

गुरुद्वारा श्री रकाबगंज साहिब से यह आंदोलन शुरू हुआ। बाबे दी बेर, सियालकोट, श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर, तरनतारन साहिब, ननकाणा साहिब के गुरुद्वारों को चरित्रहीन महंतों से मुक्त करवाने के लिए सिक्खों ने अनेकों कुर्बानियां दी। श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर की चाबियों का मोर्चा लगा। फिर गुरु के बाग के मोर्चे में सिक्ख जनता ने बेमिसाल शांतमयी आंदोलन कर पुलिस की लाठियों को अपने तन पर झेला। उनकी कुर्बानियां प्रवान चढ़ीं। गुरुद्वारे महंतों एवं सरकारी एजंटों के हाथों से मुक्त हुए तथा १९२५ ई में गुरुद्वारा कानून बन जाने से शिरोमणि गु. प्र. कमेटी स्थायी रूप से गुरुद्वारों पर काबिज़ हुई।

गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर के दौरान दर्जनों जगह खूनी साके हुए। इनमें से श्री ननकाणा साहिब में कैसे दर्दनाक साका हुआ वह संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित किया जाता है:

'ननकाणा' के अर्थ : ननकाणा साहिब श्री गुरु नानक देव जी का जन्म-स्थान है। ननकाणा शब्द 'नानकिआणा' अथवा 'नानकिआना' से बना है। इसका अर्थ है-- नानक अयन अर्थात् श्री गुरु नानक देव जी का अयन (गृह)। यह आदि गुरु श्री गुरु नानक देव जी का जन्म-स्थान है, जहां गुरुद्वारा साहिब सुशोभित है। इसकी बहुत महत्ता एवं शोभा है। यह पावन एवं ऐतिहासिक स्थान अब पाकिस्तान में होने के कारण इसके दर्शन-दीदार साधारण संगत के लिए आसान नहीं हैं। सिक्ख संगत प्रतिदिन इस पवित्र गुरुधाम को अरदास में इन शब्दों द्वारा याद करती हैं :-

"हे अकाल पुरख आपणे पंथ दे सदा सहाई दातार जीओ ! श्री ननकाणा साहिब ते होर गुरदुआरिआं गुरधामां दे जिन्हां तों पंथ नूं विछोड़िआ गिआ है; खुल्हे दरशन दीदार ते सेवा संभाल का दान ख़ालसा जी नूं बख़शो।"

श्री ननकाणा साहिब का खूनी साका : श्री ननकाणा साहिब में २० फरवरी, १९२१ ई को बहुत ही दर्दनाक खूनी साका घटित हुआ। इसमें अनेकों निहत्थे सिंघ शहीद हुए। शांतमयी ढंग से एवं बड़े ही सच्चे-सुच्चे उद्देश्य की खातिर आंदोलन करने वाले सिक्खों के कैसे टुकड़े किए गए, गोलियों से उनकी छातियां छलनी की गयीं और कैसे बेरहमी से उन्हें ज़िंदा जला दिया गया, इस समस्त साके की गाथा रौंगटे खड़े कर देने

वाली है, जो कि इस प्रकार है:-

व्यभिचारी महंतों का प्रबंध : श्री ननकाणा साहिब का ऐतिहासिक गुरुद्वारा महंतों के कब्ज़े में तथा उनके प्रबंध तले था। गुरुद्वारा साहिब के पास बहुत सारी खेती योग्य ज़मीन थी। इस पर भी महंतों का ही कब्ज़ा था। जब तक इस गुरुधाम की आय कम थी यहां के महंत काफी हद तक सिक्ख संगत की इच्छाओं एवं भावनायों का ख़्याल रखते थे, जो कि हर वर्ष भारी संख्या में इस पवित्र स्थान के दर्शन के लिए आती थी। जब यहां से एक नहर निकाल दी गयी तो इस ज़मीन की कीमत एकदम बढ़ गयी, फसल भी अच्छी-खासी होने लग गयी तो महंतों का ध्यान भी पैसे की तरफ ही हो गया। वे माल अफसरों के साथ सांठ-गांठ करने लग गए और साधारण जनता की ज़रूरतों की तरफ उनका कोई ध्यान न रहा।[१] वे ऐश करने लगे; बदचलन व रिश्वतखोर बन गए।

एक ओर तो महंत यह दावा करते थे कि वे लोगों के सेवक हैं किंतु (उस समयानुसार) दो-तीन लाख की वार्षिक आय होने के कारण उनका मन लोभित हो गया। उनकी नीयति बदल गयी और रुचि गलत दिशा में लग गयी। उनमें से एक महंत तो बहुत ही बदनाम था। वो बहुत ज्यादा शराब पीता था और व्यभिचारी भी था। उसको एक ऐसा बुरा लैंगिक रोग हो गया था कि उसके लिए ठीक से चलना भी मुश्किल हो गया। एक और महंत, जिसने उसकी जगह ली, एक जाने-पहचाने सरदार की विधवा को अपने पास रखे हुए था, जिससे उसका एक लड़का भी था। वह नाच-मंडलियों को बुलाकर नाच करवाता। यहां तक कि कई बार वह जन्म-स्थान के पवित्र अहाते में भी ऐसा करने से न चूकता।[२] इस बुरे चरित्र वाले का नाम महंत नरैण दास था, जिसने एक मजिस्ट्रेट के सामने सिक्ख संगत के साथ किए सभी वादों की धज्जियां उड़ा दी थीं। वो अपने पूर्व के महंतों से भी ज्यादा शराबी व कामी था। उसने एक मुसलमान (मिरासी) की पत्नी को अपने घर रखा हुआ था तथा उसमें से उसके बच्चे भी थे।[३]

महंत नरैण दास के समय गुरुद्वारा साहिब के भीतर शराब पीकर अनेकों व्यभिचार करने की शिकायतें आयीं। कई बार महंत के पाले हुए बदमाश यात्रियों में से भी स्त्रियों की इज्जत लूट लेते। १९१८ ई में एक सिंधी श्रद्धालु श्री ननकाणा साहिब के दर्शन के लिए आया। एक पुजारी ने उसकी १३ वर्षीय बच्ची के साथ मुंह काला किया। उसी वर्ष जड़ों वाले क्षेत्र की छः स्त्रियां पूर्णिमा के अवसर पर जन्म-स्थान पहुंची और रात वहीं ठहरीं। रात को महंतों और उनके रखे बदमाशों ने सभी के साथ दुष्कर्म किया।[४] ऐसी बुरी करतूतें होती रहती थीं। कुछ तो प्रकट हो जातीं और कुछ इसलिए गुप्त रहतीं कि सम्बंधित संगत बदनामी के डर से चुप रहती।

सिक्ख संगत द्वारा महंत को दी चेतावनी का प्रतिक्रम : ऐसी कुरीतियां तथा अनर्थ होते देख-सुनकर अक्तूबर, १९२० ई के शुरू में धारोवाल[५] में सिक्ख संगत का भारी दीवान सजा। एकत्र हुए सिक्खों ने हर पक्ष से विचार करके सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव पारित किया कि महंत अपने आपको सुधारे व गुरुद्वारे के प्रबंध में भी सुधार लाये।

संगत की मांग महंत तक पहुंचायी गयी। उसने साधारण जनता की शिकायतें एवं गिले-शिकवे दूर करने की बजाए अत्याचार एवं

तशद्दुद करने की तैयारी प्रारंभ कर दी। श्री गुरु नानक देव जी का प्रकाश उत्सव नज़दीक था। इर्द-गिर्द के चक्कों के तीन-चार सौ आदमी भाड़े पर इकट्ठा करके उसने उनको गुरुद्वारा साहिब के आस-पास नियत कर दिया। फिर महंत नरैण दास ने बाबा करतार सिंघ (बंदी)[६] के साथ सलाह करके ननकाणा साहिब में महंतों की एक एकत्रता बुलायी, जिसमें लगभग ६० आदमी शामिल हुए। अकाली सुधारकों का मुकाबला करने के लिए एक कमेटी बनायी गयी, जिसका प्रधान महंत नरैण दास तथा सचिव महंत बसंत दास को नियुक्त किया गया। इन महंतों ने साठ हज़ार रुपया इकट्ठा किया ताकि भाड़े पर आदमी रखे जा सकें। इस एकत्रता में यह भी फैसला हुआ कि लाहौर से महंतों द्वारा एक 'संत सेवक' नामक अख़बार जारी किया जाए।[७]

१९२० ई में जब गुरु नानक साहिब का जन्म-उत्सव अर्थात् कार्तिक पूर्णिमा का दिवस नज़दीक आया तो महंत नरैण दास ने अपने चार-पांच सौ आदमियों का मुजाहरा किया। गुरुपर्व के मौके पर आने वाली संगत में से जिस पर भी महंत के आदमियों ने अकाली होने का शक किया, उसको जन्म-स्थान पर जाने से रोक दिया। महंत ने पटियाला के महाराजा भुपिंदर सिंघ एवं लाहौर के कमिश्नर मिस्टर किंग से सहायता मांगी किंतु उन्होंने उसको किसी प्रकार की सहायता का कोई भरोसा न दिया।

सुधार करने हेतु पंथ में जोश : सारे पंथ में गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब के प्रबंध में सुधार करने हेतु बहुत जोश था। २३ जनवरी से ६ फरवरी, १९२१ तक श्री अकाल तख़्त साहिब एवं शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के समागम हुए, जिनमें गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब के प्रबंध के बारे में विचारें हुईं। इस सम्बंधी एक खुली चिट्ठी प्रकाशित की गयी।

गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब के दीवान तथा लंगर के प्रबंध के लिए एक कमेटी बनायी गयी, जिसमें भाई लछमण सिंघ, स. दलीप सिंघ, स. तेजा सिंघ समुंदरी, भाई करतार सिंघ झब्बर तथा स. गुरबख़्श सिंघ शामिल किए गए।

कुछ दिनों बाद धारोवाल के एक ऊंचे, लंबे दर्शनी सरदार भाई लछमण सिंघ ने जत्था तैयार करना शुरू कर दिया। ज़िला शेखूपुरा तथा ज़िला लायलपुर में जगह-जगह दीवान किए गए। ऊपर कथित कमेटी के सदस्यों के अलावा इस लहर को आगे बढ़ाने के लिए मास्टर तारा सिंघ, स. तेजा सिंघ चूहड़काणा, स. सुच्चा सिंघ जैचक, भाई बूटा सिंघ (२०४), स. जड़ांवाला, बढ़-चढ़कर योगदान दे रहे थे। १७ फरवरी, १९२१ को श्री गुरु सिंघ सभा, लायलपुर के गुरुद्वारे में मुखिया सिंघों की एकत्रता हुई, जिसमें जत्थे की शक्ल में श्री ननकाणा साहिब जाने का फैसला हुआ।

महंत नरैण दास द्वारा तैयारियां : महंत नरैण दास ने ७ फरवरी, १९२१ ई को एक एकत्रता बुलाई, जिसमें अपने हिमायती इकट्ठा किए। इनमें कुछ भट्टी मुसलमान भी थे। महंत ने भाई करतार सिंघ झब्बर से बातचीत करने के लिए शेखूपुरा पहुंचने के लिए १४ फरवरी तारीख निश्चित की। वो खुद वहां न पहुंचा। उसने महंत जीवन दास को भेज दिया। एक तरफ तो वह बातचीत करने का प्रकटावा कर रहा था तथा दूसरी तरफ वह अकाली सिंघों के विरुद्ध कार्यवाही करने की तैयारी कर रहा था। अकालियों द्वारा १९ फरवरी को श्री ननाकणा साहिब पहुंचने का विचार हुआ। महंत ने इन दिनों लाहौर में एक कान्फ्रेंस बुलायी, जिसकी

अध्यक्षता बाबा करतार सिंघ (बेदी) ने की। सिंघों को कत्ल करने के लिए बड़े पैमाने पर तैयारियां होने लगीं। उनके विरुद्ध प्रेस (मीडिया) में बहुत ही अभद्र ढंग से प्रचार किया जाने लगा। महंत ने १४ पीपे मिट्टी का तेल, पचास मण लकड़ियां गुरुद्वारा श्री जन्म-स्थान में रखवा दीं।

अकाली सिंघों को महंत के गंदे इरादों एवं कुटिल चालों का पता चल गया। 'अकाली' अख़बार लाहौर के कार्यालय में कुछ मुखिया सिंघों की एकत्रता हुई। हालात पर विचार होने के पश्चात फैसला हुआ कि जत्था भेजने का अंतिम दिन निश्चित किए बिना कोई जत्था श्री ननकाणा साहिब न जाए। सिक्ख अगुओं ने महंत की बदनीति एवं कुटिल चालों के बारे में कुछ एकत्रताओं, समागमों व अख़बारों द्वारा सरकार को चेतावनी भी दी।[८] उन्होंने स्पष्ट किया कि हिंसा का मुकाबला अहिंसा के साथ करेंगे। गुरुद्वारों के प्रबंध में सुधार लाना अति आवश्यक है।

इस दौरान शिरोमणि गु. प्र. कमेटी की एक मीटिंग हुई, जिसमें फैसला हुआ कि ४,५ व ६ मार्च, १९२१ ई को ज्यादा से ज्यादा पंथ-दर्दी सिक्ख श्री ननकाणा साहिब इकट्ठे हों ताकि वहां अनुशासनहीन व जिद्दी महंत से कहा जाए कि वो अपने आपको सुधार ले तथा गुरुद्वारा श्री जन्म-स्थान का प्रबंध ठीक करे। महंत ने तैयारियां और भी ज्यादा कस लीं। जब उसने पूरी तैयारी कर ली तो उसके अख़बार 'संत सेवक' ने खुलेआम यह धमकी दी कि "अगर सिक्ख श्री ननकाणा साहिब इकट्ठा हुए तो उनके साथ पूरी सख़्ती से निपटा जायेगा।"[९]

शेखूपुरा ज़िले के कुछेक सज्जनों ने निश्चित तारीख से पहले ही श्री ननकाणा साहिब जाकर महंत को ऐसी सख़्त कार्यवाही करने से रोकने का फैसला किया। इनमें भाई लछमण सिंघ, भाई करतार सिंघ झब्बर तथा लायलपुर के स. बूटा शामिल थे।

जब शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के नेताओं-- मास्टर तारा सिंघ तथा स. तेजा सिंघ समुंदरी को इस बात का पता चला तो उन्होंने इसके साथ असहमति प्रकट की। उन्होंने सभी ओर यह संदेश देकर संदेशवाहक भेज दिए कि लोगों को अभी श्री ननकाणा साहिब जाने से रोक दिया जाए।

भाई लछमण सिंघ तथा भाई करतार सिंघ झब्बर अपने-अपने जत्थे लेकर चल पड़े थे। भाई करतार सिंघ को रोकने के लिए एक आदमी गुरुद्वारा श्री खरा (सच्चा) सौदा गया। उधर भाई लछमण सिंघ १९ फरवरी की शाम को जत्था लेकर चल पड़े थे। दोनों जत्थे आपस में न मिल सके। भाई बूटा सिंघ ने भी जत्था लेकर इनके साथ शामिल होना था। भाई करतार सिंघ व भाई बूटा सिंघ को मना लिया गया कि वे अभी जत्था लेकर न चलें किंतु भाई लछमण सिंघ अरदास करके गांव से चल चुके थे। उन्होंने प्रण लिया कि वे श्री ननकाणा साहिब जायेंगे और अगर उनको शहीद भी होना पड़ा तो वे पीछे नहीं हटेंगे।

१९ फरवरी की शाम, भाई लछमण सिंघ घोड़े पर सवार होकर २३ सिंघों के जत्थे के साथ चल पड़े। रास्ते में अलग-अलग गांवों के अन्य बहादुर सिंघ भी उनके साथ शामिल होते गए। ननकाणा साहिब पहुंचने तक जत्थे की गिनती लगभग १५० हो चुकी थी। कुछ जगह जत्थे के सिंघों की गिनती २०० लिखी है।

जत्थे के सिंघों में उत्साह था। वे पूरी चढ़दी कला में आगे बढ़ रहे थे। जत्थे के सिंघ

२० फरवरी को सुबह ६ बजे श्री ननकाणा साहिब पहुंच गए। जत्थे के प्रत्येक सिंघ में शांत रहने का पक्का इरादा किया हुआ था। जत्थे का उद्देश्य था कि वह इस पावन तथा ऐतिहासिक धर्म-स्थान का कब्ज़ा पंथ को दिलाएगा।

जत्था गुरुद्वारा श्री जन्म-स्थान की हद में दाख़िल हुआ। भाई लछमण सिंघ श्री गुरु ग्रंथ साहिब की ताबिआ में बैठ गए। महंत द्वारा इकट्ठा किए गए हमलावर सिंघों पर टूट पड़े। कातिलों ने छवियों, गंडासों आदि से हमला किया। छत पर बैठे कुछ पठानों ने गोलियां चलायीं। हरी दास योगी, गुरमुख दास, लद्धा, रांझा, शेरदास आदि कातिलों ने सिंघों को गोलियों से भून डाला।[१०] लगभग १३० सिंघ गोलियों का निशाना बना दिये गए या फिर गंडासियों व कुल्हाड़ियों से टुकड़े-टुकड़े कर दिए गए। भाई लछमण सिंघ, जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब की ताबिआ में बैठे थे, उन पर भी गोलियां बरसायी गयीं। पावन स्वरूप में भी गोलियां लगीं। गुरुद्वारा श्री जन्म-स्थान की चहुखंडी के दरवाज़े काट दिए गए। अमन-पसंद सिंघों पर बेदर्दी से हमला किया गया। शहीद हुए व ज़ख़्मी सिंघों को इकट्ठा करके उनके ढेर लगा दिए गए और उन पर मिट्टी का तेल डालकर उन्हें जला दिया गया। भाई लछमण सिंघ और कुछेक सिंघ, जिनके शरीर में अभी सांस बाकी थी, को वृक्ष के साथ उलटे लटकाकर तेल डालकर जलाया गया।

भाई लछमण सिंघ के एक साथी स. दिलीप सिंघ स. उत्तम सिंघ के कारखाने में थे। उन्होंने जब गोलियों की आवाज़ सुनी तो वे गुरुद्वारा श्री जन्म-स्थान की तरफ दौड़े। महंत के गुंडों ने उनको भी छवियां मारकर गुरुद्वारे के बाहर ही शहीद कर दिया। इस प्रकार शहीद सिक्खों ने जन्म-स्थान श्री गुरु नानक देव जी के गुरुद्वारे को अपने रक्त से धोया। इस साके में लगभग १३० सिंघ शहीद हुए।

सिक्ख जगत में शोक एवं गुस्से की लहर : स. उत्तम सिंघ कारखाने वालों ने इस साके के सम्बंध में पंथक अगुओं, सिक्ख जत्थेबंदियों तथा सरकारी अफसरों को तारें भेजीं। यह दुखदायक एवं भयानक ख़बर सुनकर दुनिया त्राहि-त्राहि कर उठी। सिक्ख जगत में शोक एवं गुस्से की लहर छा गई।

२० फरवरी को डिप्टी कमिश्नर तथा सी. आई. डी. के उच्च अफ्सर श्री ननकाणा साहिब पहुंच गए। २१ फरवरी को स. हरबंस सिंघ अटारी, मास्टर तारा सिंघ, स. तेजा सिंघ समुंदरी, प्रो. जोध सिंघ, स. महिताब सिंघ, बाबा केहर सिंघ पट्टी पहुंचे। भाई करतार सिंघ झब्बर का जत्था श्री ननकाणा साहिब पहुंच चुका था। जत्थे के सिंघों में बहुत जोश था। हज़ारों सिंघ सिर पर काली दसतारें सजाकर उस शहादत वाली जगह को देखने के लिए उमड़ पड़े। सिक्खों की तो चहुं तरफ मानो बाढ़-सी आ गयी हो। लोगों में बहुत जोश था। वहां पहुंचकर संगत ने खून के आंसू बहाये।

कुछ देर बाद अंग्रेज कमिश्नर मिस्टर किंग ने श्री ननकाणा साहिब के गुरुद्वारा साहिब का कब्ज़ा शिरोमणि गु. प्र. कमेटी को दे दिया। चाबियां स. हरबंस सिंघ अटारी को दी गयीं किंतु सरकार का रवैया अभी भी सिक्खों के प्रति निश्चित एवं यकीनी तौर पर विरोधी एवं विपरीत ही था। सरकार के इस तरह के रवैये के बारे स. गुरबख़्श सिंघ झबालिया (शहीदी जीवन, पृष्ठ १४९) लिखते हैं कि सरकार का यह रवैया इन दो कारणों के कारण हुआ लगता है। पहला यह कि इस

साके के कारण सारे देश में सिक्ख जनता में बहुत गुस्सा था और उनकी भावनायों को ठेस लगने के कारण उनमें भड़काहट थी। दूसरा कारण यह प्रतीत होता है कि चूंकि कुछ अकाली नेताओं ने सरकारी अफसरों को परेशान कर रखा था। वे उनकी धौंस नहीं सहन करते थे एवं उनके विरुद्ध सरेआम प्रचार करते थे। इस कारण अंग्रेज सरकार का रुख सिक्खों के विरुद्ध था। सरकार के सिक्खों के प्रति विरोधी रवैये के कारण सिक्खों ने सरकार द्वारा की जा रही जांच से अपने आपको अलग कर लिया।

अपराधियों को सजाएं : सेशन कोर्ट ने महंत तथा उसके आदमियों को मृत्यु की सज़ा दी तथा आठ आदमियों को उम्र-कैद की सज़ा सुनायी। सोलह पठानों को सात वर्ष की कैद की सज़ा बामुशक्कत दी गयी। जब मुकद्दमा हाईकोर्ट में लगा तो उसके फैसले में महंत की मौत की सज़ा उम्र-कैद में बदल दी गयी। उसके आदमियों में से केवल तीन को फांसी की सज़ा दी गयी। यह नया फैसला देते हुए हाईकोर्ट ने कहा कि चूंकि सरकार ने महंत की सुरक्षा के लिए कोई प्रबंध नहीं किया था इसलिए उसके द्वारा जो इंतजाम किया गया वह जायज़ था किंतु उसने बिना किसी कारण शांतमयी सिंघों पर अंधाधुंध जुल्म किया, इसलिए उसको उम्र-कैद की सज़ा दी गयी तथा उसके उन तीन भाड़े पर रखे गए आदमियों को मृत्यु की सज़ा दी गयी, जिन्होंने सिक्खों का कत्लेआम करने में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

इस खूनी साके के पश्चात : इस साके के पश्चात शांतमयी ढंग से ही सिक्खों ने श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर की चाबियों का मोर्चा जीता, फिर गुरुद्वारा गुरु का बाग में पुलिस की लाठियां खाकर उफ़ तक न की तथा अन्य कई स्थानों पर इस तरह के मोर्चे लगाकर गुरुद्वारों को महंतों एवं सरकारी एजंटों के हाथों से आज़ाद करवाकर अपने प्रबंध में शामिल किया। १९२५ ई में 'गुरुद्वारा कानून' बन जाने से शिरोमणि गु. प्र. कमेटी स्थायी रूप से इन पर काबिज़ हुई।

गैर-सिक्ख नेताओं की राय : महात्मा गांधी ने सिक्खों की कामयाबी को सुनकर कहा था-- "पहली फैसलाकुन लड़ाई जीती गयी है।"

लाला लाजपत राय ने अकालियों के आंदोलन के शांतमयी ढंग की प्रशंसा करते हुए कहा कि "जहां तक अहिंसा का सम्बंध है और साथ ही सिक्खों में जो खुद को कुर्बान करने का जज़्बा है, इसके बारे में बहुत ही हैरान कर देने वाले सबूत सिक्खों ने श्री ननकाणा साहिब, अजनाला (गुरुद्वारा गुरु का बाग) एवं श्री अमृतसर में दिए हैं। उन्होंने साबित कर दिया है कि वे अपने गुरुओं के सच्चे एवं श्रेष्ठ सिक्ख हैं। उन्होंने अडोल रहकर, भड़काहट के बावजूद बिल्कुल ज़बत में रहकर बिना किसी दमगज़े या अकड़ के जिस प्रकार कुर्बानियां दी हैं, इनका मुकाबला करना कठिन होगा।"

लाहौर की अख़बार 'वंदे मातरम' 'जिमींदार' तथा 'ट्रिब्यून' ने, इलाहाबाद के 'इंडीपेंडेंट' तथा मद्रास के 'स्वराज' ने सिक्खों के हक में लिखकर देश भर के लोगों की भावना को उजागर किया तथा वे सिक्खों के साथ हमदर्दी करने लग गए।

अंग्रेज पादरी मिस्टर सी. एफ़. एंड्रियूज़ ने १९२० से १९२२ ई. तक सिक्खों द्वारा पूर्ण अहिंसक रहकर गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर में किए जा रहे आंदोलन के बारे में पढ़ा-सुना तथा १९२२ ई. में गुरु का बाग के शांतमयी

मोर्चे को खुद आकर देखा। उनके मन पर गहरा असर हुआ। उन्होंने अख़बारों में कई पत्र गुरु का बाग से ही लिखे, जिससे संसार भर के अनेक लोगों की ज़मीर को जगाया। मिस्टर एंड्रियूज़ ने इन पत्रों में से एक पत्र में लिखा कि उनको सलीब की परछाईं की बार-बार याद आती रही (जिस पर हज़रत ईसा को शहीद किया गया था)। उन्होंने कहा कि मुझे वहां (गुरु का बाग में) वही पावन एवं शांतमयी वातावरण दिखा जो ईसा को शूली पर चढ़ाते वक्त था। अपने एक पत्र में मिस्टर एंड्रियूज़ ने सिक्खों की इस विलक्षण बहादुरी का ज़िक्र इन शब्दों में किया कि "सिक्खों ने यातनाएं सहकर बहादुरी की एक नई मिसाल कायम कर दिखायी है। नैतिक स्तर पर जूझने का संसार को नया सबक सिखाया है।"

पाद-टिप्पणियां :

१. प्रो. तेजा सिंघ, ऐस्सेज इन सिख़िज़्म, १९४४ लाहौर, पृष्ठ १९६

२. अगस्त, १९१७ में गुरुद्वारा श्री जन्म-स्थान के अंदर वेश्वाओं का मुजरा कराया गया। (करतार सिंघ, सिक्ख इतिहास, १९६१, पृष्ठ ३१६)

३. ऐसे कुकर्मों के हवाले प्रो. तेजा सिंघ ने अपनी पुस्तक 'ऐस्सेज़ इन सिखिज़्म' में दिए हैं। देखें पृष्ठ १९५

४. करतार सिंघ, सिक्ख इतिहास, पन्ना ३१७

५. यह गांव ज़िला शेखूपुरा में है। कुछ इतिहासकारों ने इसका नाम धारोवाली लिखा है।

६. बाबा करतार सिंघ (बेदी) तथा मंगल सिंघ कूका ने महंतों का साथ दिया। इनके कुछ साथी भी सुधारकों के विरुद्ध काम करते रहे। पंथ-विरोधी कार्यवाही के कारण बाबा करतार सिंघ को एक प्रस्ताव द्वारा पंथ से बहिष्कृत कर दिया। बाद में उसने अपनी भूल की क्षमा-याचना की। देखें प्रताप सिंघ ज्ञानी, ऐतिहासिक लैक्चर १९४५ पृष्ठ ४७५-४७७ ।

७. प्रताप सिंघ ज्ञानी, ऐतिहासिक लैक्चर, पृष्ठ ४७४

८. मिसाल के लिए देखें अक्तूबर, १९२० ई से लेकर फरवरी, १९२१ ई तक के अकाली लाहौर के परचे। इसका ८ अक्तूबर, १९२० ई का परचा ख़ास तौर पर वर्णनयोग्य है।

९. देखें प्रो. तेजा सिंघ रचित ऐस्सेज़ इन सिखिज़्म, पृष्ठ १९६

१०. प्रताप सिंघ ज्ञानी, ऐतिहासिक लैक्चर, पृष्ठ ४७६

अनुवादक :
स. गुरप्रीत सिंघ भोमा

जैतो का मोर्चा

*-सिमरजीत सिंघ**

ज़िला फरीदकोट का कसबा जैतो बठिंडा-फिरोज़पुर रेलवे लाईन पर बठिंडा से २५ किलोमीटर दूर है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की आमद की याद में यहां गुरुद्वारा साहिब सुशोभित है। इस गुरुद्वारा साहिब की इमारत नाभा रियासत के नरेश महाराजा हीरा सिंघ ने बनवाई थी। गुरुद्वारा साहिब के साथ ही एक सरोवर है, जिसको 'गंगसर' कहा जाता है। इस स्थान के प्रति संगत में भारी श्रद्धा है।

गुरु-घर के श्रद्धालु सिक्ख चौधरी तिलोके के वंशजों ने सिक्ख रियासतें कायम कीं। इनमें से चौधरी स. गुरदित्त सिंघ ने बहुत सारा इलाका मुगल सरकार से छीनकर अपनी जागीर में शामिल किया। सरहिंद के सूबेदार जैन खां को मारकर सरहिंद फ़तहि करने के बाद स. गुरदित्त सिंघ के पोते स. हमीर सिंघ के हिस्से अमलोह तथा रोड़ी का इलाका आया और इसने नाभा रियासत कायम की। दिसंबर, १७८३ ई. में राजा हमीर सिंघ की मृत्यु के बाद उसके आठ वर्षीय पुत्र राजा जसवंत सिंघ को रियासत का कामकाज संभाल के लिए दिया गया। उसके बालिग होने तक उसकी सौतेली मां रानी देसां राज्य-प्रबंध चलाती रही। इसी समय के दौरान अंग्रेजों का प्रभाव पंजाब में बढ़ता गया। ये रियासतें दोहरी मार तले आ गईं। एक तरफ अंग्रेज इनको अपने अधीन करने के लिए पूरा ज़ोर लगा रहे थे, दूसरी तरफ महाराजा रणजीत सिंघ इनको सिक्ख राज्य में मिलाने की इच्छा रखते थे। माई देसां ने सोच-विचारकर १८०९ ई. में अंग्रेजों की सरप्रस्ती हासिल कर ली। २२ मई, १८४० ई. में राजा जसवंत सिंघ की मृत्यु हो गई तथा उसका पुत्र स. देविंदर सिंघ गद्दी पर बैठा। महाराजा रणजीत सिंघ की मृत्यु के बाद अंग्रेजों ने अपना पूरा ज़ोर सिक्ख राज्य को अपने अधीन करने के लिए लगा दिया। राजा जसवंत सिंघ ने अपनी हमदर्दी सिक्ख राज्य के साथ प्रकट की, जिसके फलस्वरूप अंग्रेजों द्वारा आपको गद्दी से उतारकर पचास हज़ार की पेंशन देकर मथुरा भेज दिया गया तथा रियासत का चौथा हिस्सा ज़ब्त कर लिया गया। जनवरी, १८४७ ई. में राजा देविंदर सिंघ के नाबालिग पुत्र टिक्का भरपूर सिंघ को गद्दी पर बैठाकर तीन अधिकारियों की कौंसिल बना दी गई। राजा भरपूर सिंघ की मृत्यु के बाद उसका भाई भगवान सिंघ गद्दी का वारिस बना। राजा भगवान सिंघ बे-औलाद मर गया, इसलिए बडरुक्खां शाखा के स. सुक्खा सिंघ के पुत्र स. हीरा सिंघ को राज्य-गद्दी का वारिस समझते हुए राज्य-प्रबंध दिया गया।

नाभा-पति महाराजा हीरा सिंघ तथा रानी जसमेर कौर के घर राजकुमार रिपुदमन सिंघ का जन्म हीरा महल नाभा में ४ मार्च, १८८३ ई. को हुआ था। राजकुमार का पालन-पोषण बहुत ही अच्छे ढंग से किया गया। इनकी शिक्षा की जिम्मेदारी लाला बिशन दास तथा भाई कान्ह सिंघ के सुपुर्द की गई। इसके अतिरिक्त

**संपादक, 'गुरमति ज्ञान' एवं 'गुरमति प्रकाश'।*

बाबा अतर सिंघ जी मसतूआणा वाले भी आप जी को ज्ञान से भरपूर करते रहते थे। राजकुमार रिपुदमन सिंघ का अनंद कारज १९०१ ई में स. गुरदिआल सिंघ (मान) की पुत्री बीबी जगदीश कौर के साथ सम्पन्न हुआ। सन् १९०६ ई में इनको २ वर्ष के लिए गवर्नर जनरल की लेजिसलेटिव कौंसिल का सदस्य बनाया गया। इसके दौरान आपने अनंद मैरिज बिल पास करवाने हेतु तैयार करवाया। कौंसिल में आपने हमेशा अपनी कौम तथा देश के हक में आवाज़ बुलंद की। इनके घर ८ अक्तूबर, १९०८ ई को पुत्री बीबी अमर कौर ने जन्म लिया।

२५ दिसंबर, १९११ ई को महाराजा हीरा सिंघ का देहांत हो गया। इस समय राजकुमार रिपुदमन सिंघ फ्रांस में थे। देश वापिस पहुंचने पर २४ जनवरी, १९१२ ई को इनको राज्य सिंहासन पर बैठाने के लिए ताजपोशी की गई। इस रस्म को आपने सिक्ख मर्यादा के अनुसार निभाया तथा किसी भी अंग्रेज अधिकारी को नहीं बुलाया। अंग्रेज सरकार ने इसका बहुत गुस्सा किया। सन् १९१४ ई में जब अंग्रेज सरकार ने इनसे जंग के लिए फौज मांगी तो इन्होंने फौज देने से इंकार कर दिया। अंग्रेज सरकार के सियासी भगौड़े भी नाभा रियासत में आकर पनाह लेते थे। महाराजा नाभा द्वारा प्रिंस ऑफ वेल्ज़ का सम्मान न करने आदि के कारण अंग्रेजों द्वारा अंदाज़ा लगाया गया कि महाराजा रिपुदमन सिंघ बागी रुचि रखते हैं। अंग्रेज़ सरकार ने यह भी प्रस्ताव पारित कर दिया कि जिस राजा या रियासत के मालिक की मृत्यु बिना किसी पुत्र के होगी, उस रियासत का सारा प्रबंध अंग्रेज सरकार अधीन आ जाएगा। राजकुमार रिपुदमन सिंघ ने सन् १९१८ ई में मेजर प्रेम सिंघ गरेवाल रायपुरिया की पुत्री बीबी सरोजनी देवी के साथ दूसरी शादी कर ली, जिससे इनके घर २२ सितंबर, १९१९ ई को पुत्र टिक्का प्रताप सिंघ का जन्म हुआ।

अंग्रेज सरकार को गदरियों के साथ महाराजा की हमदर्दी की रिपोर्टें पहुंचनी शुरू हो गईं। गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर तथा ननकाणा साहिब के साके के समय भी महाराजा रिपुदमन सिंघ का विशेष सहयोग रहा। ननकाणा साहिब के रोष के रूप में आपने काली दसतार सजाकर सरकारी स्तर पर मातम भी मनाया।

पटियाला एवं नाभा रियासत का परस्पर झगड़ा हो गया। अंग्रेजों को अपना बदला लेने का मौका मिल गया। सन् १९२२ ई में हाईकोर्ट के एक जज से जांच करवाई गई। अंग्रेजों की शह पर जज ने रिपोर्ट में महाराजा नाभा को दोषी करार दे दिया। जुलाई, १९२३ ई में महाराजा को नाभा की राज्यगद्दी छोड़कर गुज़ारा भत्ता लेने के लिए मज़बूर किया गया। इस कार्यवाही के लिए महाराजा से ज़बरन हस्ताक्षर भी करवा लिए गए तथा तीन लाख वार्षिक पेंशन देकर तुरंत कार में बैठाकर देहरादून भेज दिया गया। इनको किसी के साथ कोई बात करने तथा मिलने का मौका भी न दिया गया। रियासत के प्रबंध के लिए अंग्रेज प्रबंधक उगलवी की नियुक्ति कर दी गई तथा कुछ समय बाद इसकी जगह पर विल्सन को नियुक्त कर दिया गया।

महाराजा को गद्दी से उतारने के कारण सिक्ख जगत में बहुत गुस्सा एवं रोष फैल गया। शिरोमणि गु. प्र. कमेटी द्वारा अंग्रेजों की धक्केशाही के विरोध तथा महाराजा के हक में आवाज़ बुलंद की गई। जगह-जगह जलसे एवं जलूस निकाले गए। ९ सितंबर, १९२३ ई को नाभा

दिवस के रूप में मनाने का फैसला किया गया। नाभा की संगत द्वारा देश भर के गुरुद्वारा साहिबान में निरंतर श्री अखंड पाठ साहिब करने का काम आरंभ किया गया।

अंग्रेज सरकार ने सिक्खों की इन गतिविधियों को रोकने के लिए मुखी सिक्खों को गिरफ्तार करना शुरू कर दिया। नाभा के मुखी जत्थेदार ऊधम सिंघ तथा स. हीरा सिंघ को नाभा से अमलोह आते हुए रास्ते में गिरफ्तार कर लिया गया। पंजाब में जहां-जहां भी महाराजा नाभा की वापिसी की मांग के लिए श्री अखंड पाठ साहिब एवं दीवान रखे गए थे, पुलिस ने उन गांवों की घेराबंदी कर सिक्खों पर कहीं जाने की पाबंदी लगा दी। इसी सम्बंध में खन्ना के समीप गांव सलाणा में भी दीवान एवं श्री अखंड पाठ साहिब रखे जाने का फैसला किया गया। पुलिस को पता चलने पर सिक्खों की गिरफ्तारी शुरू हो गई। दीवान की तारीख से दो दिन पूर्व रात को पुलिस तथा फौज के लगभग २५० सिपाहियों ने गांव को घेरा डाल लिया एवं अफसर भी पहुंच गए। अमलोह तहसील के सारे गांवों के नंबरदार, चौंकीदार, ज़ैलदार, पटवारी, इकट्ठा कर लिए गए। पुलिस के चीफ अफसर नत्थू राम, छज्जू सिंघ नाज़म अमलोह, नायब शिवदेव सिंघ तथा तहसीलदार भी गांव पहुंच गए। रात भर में गांव के गिर्द खेमे लग गए जो छावनी का नज़ारा पेश करने लगे। गांव को आने वाले सारे रास्ते बंद कर दिए गए। गांव के इर्द-गिर्द चार मील तक पूरी नाकाबंदी कर दी गई ताकि गांव में कोई भी अकाली दाख़िल न हो सके। अंग्रेज सरकार ने शिरोमणि गु. प्र. कमेटी तथा शिरोमणि अकाली दल के लगभग ६० सदस्य १३-१४ अक्तूबर, १९२३ ई को गिरफ्तार कर लिए।

जैतो के स्थानीय निवासियों द्वारा इकट्ठा होकर १४ सितंबर, १९२३ ई को गुरुद्वारा श्री गंगसर साहिब, जैतो में श्री अखंड पाठ साहिब आरंभ किए गए। सरकार ने पुलिस भेजकर श्री अखंड पाठ साहिब करने के लिए आए गांव मौड़ के ग्रंथी सिंघ ज्ञानी इंदर सिंघ को ज़बरन गिरफ्तार कर लिया तथा गुरुद्वारा साहिब में किसी भी व्यक्ति के प्रवेश पर पाबंदी लगा दी। इसी महीने में फिर से श्री अखंड पाठ साहिब प्रकाश करवाए गए। पुलिस द्वारा श्री अखंड पाठ साहिब कर रहे ग्रंथी सिंघ को श्री गुरु ग्रंथ साहिब की ताबिया में से उठाकर गिरफ्तार कर लिया गया। इससे श्री अखंड पाठ साहिब खंडित हो गया। अंग्रेज सरकार की इस धक्केशाही के विरुद्ध लोगों में भारी आक्रोश फैल गया। सिक्खों ने इस धक्केशाही के विरुद्ध मोर्चा लगा दिया। इस मोर्चे का उद्देश्य था कि जैतो जाकर श्री अखंड पाठ साहिब फिर से आरंभ किया जाए। २५ सितंबर, १९२३ ई से प्रतिदिन श्री अकाल तख़्त साहिब से २५-२५ सिंघों का जत्था जाना शुरू हो गया। इन सिंघों को पुलिस द्वारा पकड़कर राजस्थान के दूर-दराज़ जंगलों में छोड़ दिया जाता। इस मोर्चे में भाग लेने वाले सिंघों को कई तरह की शारीरिक यातनाएं दी गईं तथा बहुत-से लोगों की जायदादें जब्त कर ली गईं। बहुत-से सिंघों को सात से चौदह वर्ष तक की लंबी सज़ाएं दी गईं। नाभा की जेल में बहुत यातनाएं दी जातीं, जिसके बारे में एक पुस्तिका 'मां-पुत्त दे सवाल' भी छपी थी। इस में मां पुत्र से कहती है :

बच्चिआ वे! नाभे नूं ना जाईं।
लाल वे! उत्थे मार डांगां दी पैंदी।
नाभे ने कसाई वस्सदे, उत्थे खल्ल लाहुणगे तेरी।

बच्चा मां को जवाब देता है :

अम्मीए! मैं नाभे नूं जरूर जावांगा.
भावें सिर लत्थ जाए मेरा।

उस समय नाभा रियासत का प्रबंध मि: विल्सन जानस्टन अंग्रेज कर रहा था। सिक्खों पर हो रहे जुल्म को देखने पंडित जवाहर लाल नेहरू, प्रो. जी. टी. गिडवानी तथा मि. के. सनतानम जैतो पहुंचे तो इनको भी गिरफ्तार करके जेल की काल-कोठड़ी में बंद कर दिया गया तथा मुकद्दमा चलाकर ढाई वर्ष की कैद कर दी गई। पंडित जवाहर लाल नेहरू तथा मि. सनतानम को नाभा में एजीटेशन के दौरान न आने की हिदायत की गई, जो इन्होंने मान ली तथा इनको छोड़ दिया गया। प्रो. जी. टी. गिडवानी ने शर्त न मानी और वे चार वर्ष कैद काटने के बाद अन्य कैदियों के साथ ही रिहा हुए।

ज़िला लुधियाना के मादपुर गांव के भाई रण सिंघ ने भी अपने परिवार सहित श्री अमृतसर जाकर शहीदी जत्थों में जाने के लिए अपने परिवार का नाम दर्ज करवाने के लिए विनती की। शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर ने उनका जज़्बा देखकर उनका नाम जत्थे में शामिल कर लिया परंतु उनके परिवार को वापिस भेज दिया। आपने चौथे शहीदी जत्थे में जाना था। फिर ५००-५०० सिंघों के जत्थे जाना शुरू हो गए। ५०० सिंघों का पहला जत्था ९ फरवरी, १९२४ ई. को श्री अकाल तख़्त साहिब, श्री अमृतसर से रवाना हुआ। यह जत्था पड़ाव-दर-पड़ाव पैदल मार्च करता हुआ २१ फरवरी को जैतो पहुंचा। जब यह जत्था टिब्बी साहिब वाली जगह पर पहुंचा तो फौज द्वारा तीनों तरफ से घेरा डाल लिया गया। अंग्रेज अफसर विल्सन ने गोली चलाने का हुक्म दे दिया। गोलीबारी शुरू हो गई। शहीदी जत्थे के सिंघ बेख़ौफ़ गुरुद्वारा साहिब की तरफ बढ़ते जा रहे थे। जत्थे में शामिल एक महिला की गोद में छोटा बच्चा था। वह बच्चा फौज की गोली से शहीदी प्राप्त कर गया। मां ने बच्चे की शहादत होने पर कोई रोना-धोना नहीं किया, बल्कि बच्चे को गोद से उतारकर वहीं धरती पर लेटा दिया और खुद शहीद होने के लिए बरसती गोलियों में आगे बढ़ती गई। इस गोलीबारी में १०० सिंघ शहीद हुए और लगभग २०० जख़्मी हो गए। गोलीबारी के बाद भी पुलिस कर्मचारियों ने घोड़ों पर सवार जख़्मियों पर लाठियों से हमला कर दिया। जख़्मियों की सहायता के लिए किसी डॉक्टर को भी पास नहीं जाने दिया। जब अफसरों ने देखा कि बरसती गोलियों का सिंघों को कोई ख़ौफ़ नहीं है तो गोलीबारी बंद करके जत्थे को गिरफ्तार करके नाभा बीड़ में भेज दिया। सिंघों पर मुकद्दमा दायर दिया गया कि इन्होंने पुलिस पर हमला किया है, जिस कारण पुलिस को मजबूरी में गोली चलानी पड़ी। इनको सात-सात वर्ष की लंबी सज़ा दी गई। इस साके ने सारे भारत में हाहाकार मचा दी और जगह-जगह सरकार की निंदा होने लगी। बड़े-बड़े नेताओं एवं संस्थाओं ने इसमें हिस्सा लिया तथा सिक्खों से हमदर्दी का इज़हार किया। इस साके की ख़बर सारे संसार में फैल गई तथा श्री अकाल तख़्त साहिब से पांच-पांच सौ के अन्य जत्थे जैतो की तरफ रवाना होना शुरू हो गए।

दूसरा शहीदी जत्था २८ फरवरी, १९२४ ई. को श्री अमृतसर से जैतो के लिए रवाना हुआ। तीसरा जत्था २२ मार्च, १९२४ ई. को जैतो के लिए रवाना हुआ। चौथा जत्था २७ मार्च, १९२४ ई. श्री अनंदपुर साहिब से रवाना

हुआ। इस जत्थे में भाई रण सिंघ भी शामिल थे। यह जत्था जब लुधियाना पहुंचा तो ओरीएंटल भुजंगण आश्रम जसपालों के मैनेजर, जो भाई रण सिंघ के मित्र थे, आप जी से मिलने आए। इनको मिलने के कारण अंग्रेज सरकार ने उन पर भी हुक्म की उल्लंघना करने का मुकद्दमा दायर कर दिया जो बहुत देर बाद रफ़ा-दफ़ा हुआ।

चार नंबर शहीदी जत्था १८ अप्रैल, १९२४ ई को जैतो पहुंच गया। जैतो पहुंचने पर जत्थे में शामिल सारे सिंघों को गिरफ्तार करके नाभा जेल भेज दिया गया। इसके बाद जेल में आने वाले जत्थों की संख्या में भारी बढ़ौतरी होने लगी। जेल में कैदियों को रखने की समस्या शुरू हो गई। नाभा सेंट्रल जेल के साथ बीड़ दुसांझ तथा बीड़ मैंस में अस्थाई जेलें बनाई गईं। जेल अधिकारियों द्वारा गिरफ्तार प्रदर्शनकारियों के साथ बहुत ही बुरा व्यवहार किया जाता था।

भाई रण सिंघ को नाभा जेल के बीड़ दुसांझ वाले कैंप में रखा गया। बाद में इसी कैंप में जत्था नं: ६, ८, ११, १२, १३ और १४ के प्रदर्शनकारियों को भी लाकर बंद किया गया। इन कैंपों में कुछ अकाली वर्करों को, जो मुखिया होते थे, नाभा जेल में ले जाकर उन पर क्षमा मांगने के लिए दबाव डाला जाता था। पुलिस द्वारा भाई रण सिंघ पर भी बहुत सख़्ती करके उन्हें क्षमा मांगने के लिए मज़बूर किया गया। भाई साहिब सदा प्रभु का भाणा मानने वाले गुरसिक्ख थे। वे इरादे से टस से मस न हुए तथा हर तरह की यातनाएं सहन करने के लिए तैयार रहे। भाई साहिब ने पुलिस की ज्यादतियों के विरुद्ध जेल में अनशन कर दिया। जेल में भाई साहिब की गतिविधियों को देखते हुए जेल कर्मचारी इनसे ईर्ष्या करने लग गए। इनको बीड़ दुसांझ से नाभा जेल में ले जाया गया।

३ मई, १९२५ ई की शाम को सेंट्रल जेल के जल्लाद उनकी कोठड़ी में आ गए। वे भाई साहिब को पकड़कर यातना गृह में ले गए। जल्लादों ने उनके केशों को छत के साथ लटकते हुए कुंडों से बांध दिया। उनको लकड़ी की कुर्सी पर खड़ा करके पैरों के साथ भारी पत्थर बांध दिए, जिनका वज़न उनके शरीर से कई गुना ज्यादा था। भाई साहिब सुखमनी साहिब का पाठ करते हुए जुल्म सहन करते गए। कुछ समय बाद कुर्सी को उनके पांवों के नीचे से निकाल लिया गया। भाई साहिब का शरीर पूरे झटके के साथ नीचे गिर गया जिससे उनकी खोपड़ी केशों सहित शरीर से अलग हो गई। कुछ समय बाद वे शहीदी प्राप्त कर गए। पुलिस द्वारा नाभा जेल के अहाते में ही उनका अंतिम संस्कार कर दिया गया।

७ जुलाई, १९२५ ई को गुरुद्वारा एक्ट लागू हो गया। इसके साथ ही जैतो का मोर्चा खत्म हो गया। शिरोमणि गु. प्र. कमेटी तथा शिरोमणि अकाली दल से 'खिलाफ़ कानूनी जमात' होने का हुक्म वापिस ले लिया गया। धीरे-धीरे शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के पकड़े गए सभी सदस्यों को तथा जैतो के मोर्चे में गिरफ्तार किए हुए सिंघों को रिहा कर दिया गया। ९ जुलाई, १९२५ ई को जैतो में श्री अखंड पाठ साहिब करने की छूट दी गई। २१ जुलाई, १९२५ ई को १०१ श्री अखंड पाठ साहिब करने की शृंखला शुरू की गई, जिसके भोग ६ अगस्त, १९२५ ई को डाले गए। भोग के उपरांत सारे जत्थे जैतो से चलकर ९ अगस्त, १९२५ ई को श्री तरनतारन साहिब में इकट्ठा हुए। यहां से ये जत्थे नगर कीर्तन के रूप में श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर पहुंचे, जहां इनको सम्मानित किया गया।



संघर्ष की अद्‌भुत मिसाल-- जैतो का मोर्चा

-डॉ. राजेंद्र सिंघ साहिल*

बीसवीं शताब्दी का तीसरा दशक सिक्ख समाज के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण था। इस दौर में पंजाब सहित सारे भारत में गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर चली। १९२० ई में श्री अकाल तख़्त साहिब पर एकत्रित होकर सिक्ख नेताओं के समूह द्वारा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की स्थापना की गई। एक महीने बाद ही शिरोमणि अकाली दल का गठन हुआ। इनके नेतृत्व में सिक्ख जनता ने समस्त गुरुद्वारा साहिबान को महंतों के कुप्रबंधों से मुक्त कराने के लिए एक विराट जन-आंदोलन छेड़ा जो सन् १९२५ में 'गुरुद्वारा एक्ट' लागू होने के साथ सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

समस्या की पृष्ठभूमि : दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी एवं बाबा बंदा सिंघ बहादर के पश्चात् सन् १७२० से लेकर १७८० ई तक का समय सिक्खों के लिए ज़बरदस्त संघर्ष का समय था। सिक्ख जंगलों में रहकर छापामार युद्ध जारी रखे हुए थे। ऐसे में गुरुधामों का प्रबंध उदासी संप्रदाय के संतों-महंतों के हाथ में दे दिया गया। महंतों ने सिक्खों की अनुपस्थिति में लंबे समय तक गुरुद्वारा साहिबान की सेवा-संभाल की।

महाराजा रणजीत सिंघ के काल में गुरुधामों की इमारतों और संपत्तियों का बड़े पैमाने पर निर्माण हुआ। धन की अधिकता ने महंतों को पथ-भ्रष्ट कर दिया। १८४९ ई में पंजाब पर अधिकार के बाद अंग्रेजों ने महंतों के माध्यम से गुरुद्वारा साहिबान पर नियंत्रण रखने के प्रयास आरंभ कर दिए। महंतों ने भी गुरुधामों की अथाह संपत्ति को हथियाये रखने के उद्देश्य से अंग्रेजों की कठपुतली बनना स्वीकार कर लिया। ऐसे माहौल में गुरुद्वारा साहिबान में गुरु-मर्यादा भंग हो गई और ये महंतों के भोग-विलास के अड्डे बन गये।

सिक्ख समाज इस कुप्रबंध और विलासिता से अत्यंत व्यथित था, इसलिए गुरुद्वारा साहिबान को मुक्त कराने और गुरु-मर्यादा की पुनः स्थापना हेतु एक बड़ा जन-आंदोलन चलाने का निश्चय किया गया।

विभिन्न मोर्चे : सन् १९२१ से लेकर १९२५ ई तक गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर के अंतर्गत शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी और शिरोमणि अकाली दल के नेतृत्व में अनेक मोर्चे लगाए गए और प्रत्येक में असहयोग के मार्ग पर चलते हुए सिक्ख संगत ने अद्‌भुत सफलता प्राप्त की।

बाबे दी बेर का मोर्चा, मोर्चा पंजा साहिब, साका ननकाणा साहिब, मोर्चा गुरु का बाग, चाबियों का मोर्चा आदि इस आंदोलन के प्रमुख मोर्चे हैं। इन्हीं मोर्चों में से एक प्रमुख मोर्चा है-- जैतो का मोर्चा।

जैतो का मोर्चा : जैतो का मोर्चा गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर का एक अहम मोर्चा है। इस मोर्चे ने सन् १९२४ के फरवरी महीने के अंतिम सप्ताह को सिक्ख इतिहास के पन्नों पर सदा के लिए अमर कर दिया।

हुआ यूं कि अंग्रेज सरकार ने महाराजा नाभा और महाराजा पटियाला के बीच चल रहे राजनीतिक विवाद में पक्षपात करते हुए महाराजा

*१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, फोन: ९४१७२-७६२७१

नाभा के विरुद्ध फैसला करवा के उन्हें गद्दी छोड़ने पर विवश कर दिया। इससे सिक्ख समाज में आक्रोश की लहर दौड़ गई। ५ अगस्त, १९२३ ई को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने इस अन्याय के विरुद्ध संघर्ष का एलान कर दिया। इस आंदोलन के अंतर्गत पंजाब के सभी गुरुद्वारों में निरंतर श्री अखंड पाठ साहिब करने और दीवान सजाने का कार्यक्रम आरंभ हुआ। ९ सितंबर, १९२३ ई को नाभा दिवस के रूप में मनाने का निर्णय भी लिया गया।

आंदोलन हालांकि शांतिपूर्ण था परंतु इससे आ रही जागृति से अंग्रेज सरकार झल्ला उठी। उसने गुरुद्वारा श्री गंगसर साहिब पातशाही १०वीं, जैतो में पुलिस भेजी जिसने पाठ कर रहे ज्ञानी इंदर सिंघ को श्री गुरु ग्रंथ साहिब की हजूरी में से गिरफ्तार कर लिया और श्री अखंड पाठ साहिब को खंडित कर दिया।

सिक्ख नेताओं ने आंदोलन को पहले से भी अधिक तीव्र करने का एलान करते हुए कहा कि जब तक अंग्रेजों के अफसर पश्चाताप नहीं करते तब तक श्री अखंड पाठ साहिब और दीवान निरंतर सजते रहेंगे।

शिरोमणि अकाली दल ने एक सितंबर को पहला जत्था मोर्चा लगाने के लिए जैतो भेजा। इस जत्थे को गिरफ्तार करके अगले दिन छोड़ दिया गया। ११ सितंबर को ११० सिक्खों का जत्था फिर जैतो भेजा गया। अंग्रेजों की पुलिस ने इस जत्थे के साथ भी वही व्यवहार किया।

अंततः १४ सितंबर को १०२ सिक्खों का जत्था जैतो जाकर गुरुद्वारा श्री गंगसर साहिब पहुंचने में सफल हो गया। जत्थे ने गुरुद्वारा साहिब में श्री अखंड पाठ साहिब आरंभ कर दिया और दीवान सजाकर महाराजा नाभा की बहाली के लिए तकरीरें दीं। यह कार्यक्रम चल ही रहा था कि वर्दीधारी पुलिस आई और ३० अकाली नेता तथा ३० पाठी सिंघ गिरफ्तार कर लिए गए। श्री अखंड पाठ साहिब खंडित हो गया।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने आंदोलन को और तेज़ करने का निर्णय लिया। २५ सितंबर, १९२३ से २५ सिक्खों का एक जत्था रोज़ जैतो जाने लगा। पुलिस जत्थे को पकड़ती और सैकड़ों मील दूर ले जाकर छोड़ देती। संघर्ष बढ़ता ही चला गया।

१३ अक्तूबर, १९२३ ई को शिरोमणि गु. प्र. कमेटी और शिरोमणि अकाली दल को गैर-कानूनी करार देकर इसके सभी नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। १७ अक्तूबर, १९२३ को एक नई कमेटी बनाई गई और जैतो जत्थे भेजने का सिलसिला निरंतर जारी रहा।

७ जनवरी, १९२४ ई को यह कमेटी भी गिरफ्तार कर ली गई। सिक्खों ने तीसरी कमेटी बना ली और आंदोलन को और तेज़ कर दिया।

९ फरवरी, १९२४ को ५०० सिक्खों का शहीदी जत्था जैतो भेजने का फैसला किया गया। यह जत्था २१ फरवरी को जैतो पहुंचा। एडमिनिस्ट्रेटर विल्सन जॉनस्टन, एस. पी. फिरोज़पुर गरेक्सन, नाभा रियासत के पुलिस व फौजी अफसर गुरदिआल सिंघ, नत्थूराम, बचन सिंघ आदि पुलिस लेकर तैयार थे। शांतिपूर्ण प्रदर्शन कर रहे निहत्थे जत्थे पर गोली चला दी गई। १०० से अधिक सिक्ख शहीद हो गए और २०० से भी अधिक घायल हो गए। यह दिन सिक्ख इतिहास में 'जैतो का मोर्चा' के नाम से विख्यात हुआ।

इस घटना की पूरे देश में प्रतिक्रिया हुई। मदन मोहन मालवीय समेत अनेक राष्ट्रीय नेताओं ने कड़े शब्दों में इसकी निंदा की। २

मार्च को कलकत्ता में एक भारी जलसा आयोजित किया गया जिसमें जैतो के मोर्चे का व्यापक समर्थन किया गया।

अंग्रेजों ने बलवंत सिंघ नलूआ कमेटी के माध्यम से सिक्खों को ही दोषी ठहराने का षड़यंत्र रचा परंतु सिक्खों के हौसले पस्त नहीं हुए। दूसरा जत्था २८ फरवरी, १९२४ ई को श्री अकाल तख़्त साहिब से चला और ९ मार्च को जैतो पहुंचा। जॉनस्टन फिर फौज लेकर तैयार था, लेकिन इस बार उसमें गोली चलाने की हिम्मत नहीं पड़ी। जत्थे को गिरफ्तार कर लिया। बाद में जॉनस्टन ने ५०-५० के जत्थे को पाठ करने की आज्ञा दे दी परंतु शिरोमणि गु. प्र. कमेटी ने इसे स्वीकार न किया।

जत्थों का जैतो जाना जारी रहा। तीसरा जत्था २२ मार्च को, चौथा २७ मार्च को, पांचवां १२ अप्रैल को, छठा ९ मई को, सातवां एक जून को, आठवां १० जून को, नौवां २४ जून को, दसवां और ग्यारहवां १३ जुलाई को, बारहवां १७ अगस्त को, तेरहवां १८ सितंबर को, चौदहवां १५ दिसंबर को, पंद्रहवां एक मार्च को, सोलहवां १७ अप्रैल को जैतो के लिए रवाना हुआ। कनाडा, शंघाई और हांगकांग के जत्थे भी इनमें शामिल हुए। २७ अप्रैल, १९२५ ई को १०१ सिंघों का विशेष जत्था जैतो भेजा गया।

आखिर अंग्रेज सरकार ने हार मान ली। गुरुद्वारा श्री गंगसर साहिब, जैतो में श्री अखंड पाठ साहिब पर लगाई पाबंदी २१ जुलाई, १९२५ को हटा ली गई तथा १०१ श्री अखंड पाठ साहिब संपूर्ण हुए और जैतो के मोर्चे का सफलतापूर्वक अंत हुआ।

इस प्रकार जैतो का मोर्चा सिक्ख इतिहास में सिक्खों के अहिंसक संघर्ष की अद्भुत मिसाल के रूप में दर्ज है।



कविता

सुख का आधार

सुख-दुख दोनों ही रहते हैं, मनोदशा पर निर्भर।
अतः विषमता में भी बह, सकता है सुख का निर्झर।
मात्र ज़रूरत इतनी है कि, दृष्टिकोण हम बदलें।
प्रभु का ही प्रसाद मानकर, दुख को भी हम सह लें।
दुख-कड़वाहट को भी माने, चंगा करने की औषधि।
सेहत के भी दिन आयेंगे, धैर्य से काटें अवधि।
एक और है बात खास कि, कर्म करें सब अच्छे।
भावी दुखों की जड़ खोदें, बीज बोयें हम सच्चे।
औरों का व्यवहार है कैसा, इससे न हों चालित।
खुद जिसको हम खरा मानते, उससे हों परिचालित।
सीधी गणित ज़िंदगी की है, है जीवन का सार।
पावन मन, मधु वाणी और सत्कर्म हैं सुख-आधार।
यही कामना सदा करें हम, नींव बने यह पक्की।
इन पर हो जो महल खड़ा, वो खुशियां लाये सच्ची।

-श्री प्रशांत अग्रवाल, ४०, बजरिया मोतीलाल, बरेली-२४३००३ (उ. प्र.); फोन: ०९४११६०७६७२

शहीद सरदार शाम सिंघ अटारी

*-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'**

सरदार शाम सिंघ अटारी का जन्म कब हुआ तथा इनका बचपन किस रूप में गुज़रा, इस बारे में ज्यादा कुछ पता नहीं चलता। डॉ. चोपड़ा ने अपनी पुस्तक 'Punjab As A Sovereign State' में लिखा है कि "स. शाम सिंघ पहली बार सन् १८१८ ई. में महाराजा रणजीत सिंघ की सेवा में आए थे।" डॉ. गंडा सिंघ ने लिखा है कि "मुलतान के अंतिम युद्ध से कुछ समय पूर्व स. निहाल सिंघ अटारी ने अपने सुपुत्र स. शाम सिंघ अटारी वाला को महाराजा की फ़ौज में भर्ती करवा दिया था।"

खालसा दरबार ने मुलतान के शासक मुज़फ्फर ख़ान पर सन् १८१०, १८१६ एवं १८१७ ई में तीन बार हमला किया। वह हर बार माफी मांग लेता और भविष्य में वफ़ादार रहने का विश्वास दिलाता। इसके बाद मुकर जाता और बागी हो जाता। अंतत: फैसला किया गया कि मुलतान को खालसा राज्य में शामिल कर ही लिया जाए। पहले मिस्र दीवान चंद के नेतृत्व में सेना भेजी गई किंतु सफलता नहीं मिली। पुन: कुंवर खड़क सिंघ के नेतृत्व में और सेना भेजी गई तथा साथ में स. शाम सिंघ अटारी का जत्था शामिल था। मुज़फ्फर ख़ान की सेना के साथ गुत्थम-गुत्था युद्ध हुआ और वह अपने पांच पुत्रों सहित मारा गया। स. शाम सिंघ भी गंभीर रूप से ज़ख्मी हो गए। इनकी मुलतान पर शानदार प्राप्त विजय के उपलक्ष्य में महाराजा रणजीत सिंघ ने इन्हें रंगपुर क्षेत्र का सरदार (प्रमुख) नियुक्त कर दिया तथा इनकी निडरता व वीरता की भूरि-भूरि प्रशंसा भी की। मुलतान का यह निर्णायक युद्ध सन् १८१८ ई में लड़ा गया था।

सन् १८१९ ई में कश्मीर को सिक्ख राज्य में मिलाने के लिए सिंघों को कार्यवाई करनी पड़ी, क्योंकि वहां की प्रजा शासक वर्ग से अति दुखी थी। महाराजा रणजीत सिंघ ने योजनाबद्ध ढंग से युद्ध करने हेतु अपनी सेना को दो भागों में बांटा। एक भाग मिस्र दीवान चंद व स. शाम सिंघ अटारी के नेतृत्व में भेजा गया। इन्होंने फौरन ही राजौरी व पुंछ पर विजय प्राप्त कर ली और श्रीनगर की ओर बढ़ गए।

श्रीनगर का शासक जब्बार ख़ान अपनी सेना ले मुकाबला करने को आ पहुंचा। सिंघों से मुकाबला करना आसान नहीं था। स. शाम सिंघ अटारी ने इस युद्ध में भी अपने बुलंद हौसले एवं बहादुरी से दुश्मनों के हौसले पस्त कर दिए। जब्बार ख़ान बुरी तरह से घायल हो गया तथा रण-क्षेत्र छोड़ पेशावर की ओर भाग गया। कश्मीर पर सिक्ख सरकार का कब्ज़ा हो गया और उसे सिक्ख राज्य में शामिल कर लिया गया। इसके बाद अहमद शाह बरेलवी को भी मैदाने-जंग में स. शाम सिंघ अटारी ने चारों खाने चित्त कर दिया और वह भी भाग गया। सन् १८३४ में पेशावर पर सिंघों द्वारा कब्ज़ा किए जाने के मौके पर भी स. शाम सिंघ अटारी ने अपने साहस का परिचय दिया।

सन् १८३५ ई में महाराजा रणजीत सिंघ ने अपने पौत्र कुंवर नौनिहाल सिंघ की सगाई स. शाम सिंघ अटारी की सुपुत्री बीबी नानकी के साथ कर दी। १८३७ ई. में कुंवर जी व बीबी नानकी का विवाह कर दिया गया।

इसी वर्ष यानि १८३७ ई. में ही दोस्त

**बी-एक्स ९२५, मोहल्ला संतोखपुरा, होशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, फोन : ९८७२२-५४९९०*

मुहम्मद ख़ान ने जमरौद के किले पर आक्रमण कर दिया। स. हरी सिंघ नलूआ पेशावर में गंभीर रूप से बीमार पड़े थे। आक्रमण का समाचार मिलते ही वे तुरंत जमरौद में पहुंच गए तथा दुश्मन के छक्के छुड़ा दिए। जब महाराजा रणजीत सिंघ को जमरौद पर हमले की सूचना मिली तो उन्होंने कुंवर नौनिहाल सिंघ एवं स. शाम सिंघ अटारी के नेतृत्व में एक बड़ी सेना भेजी। इस सेना के पहुंचने से पहले ही लड़ाई खत्म हो चुकी थी और स. हरी सिंघ नलूआ शहीद हो चुके थे। मुहम्मद ख़ान को उसके किए की सज़ा देकर तथा जमरौद का पूर्ण राज्य-प्रबंध सुनिश्चित कर स. शाम सिंघ वापिस लौट आए।

जून, १८३९ ई में महाराजा रणजीत सिंघ का देहांत हो गया। उनके देहांत के बाद खालसा दरबार में साज़िशें काफी बढ़ गईं। एक साल बाद ही महाराजा खड़क सिंघ को मार दिया गया। उसी दिन डोगरों ने कुंवर नौनिहाल सिंघ को भी चाल चलकर मार दिया। स. शाम सिंघ अटारी इन सभी गतिविधियों से वाकिफ़ एवं मायूस थे। जब १८४५ ई में अंग्रेजों के साथ सिक्खों की लड़ाई शुरू हुई। तब तेजा सिंघ व लाल सिंघ की गद्दारी से मुद्दकी व भाई फेरू की लड़ाईयां सिक्ख फौज जीत कर भी हार गई थी। महारानी जिंद कौन ने स. शाम सिंघ अटारी को एक पत्र लिख अटारी में भेजा। इसमें मैदाने-जंग में पहुंचने का संदेश था। पत्र पढ़ते ही वे जोश में आ गए और लड़ाई के मोर्चे पर आ डटे। घर से चलते वक्त वाहिगुरु के समक्ष अरदास की और प्रण किया कि यदि अंग्रेजों को पराजित न कर सका तो ज़िंदा वापिस नहीं लौटूंगा। अंतिम सांस तक लड़ता व जूझता रहूंगा।

स. शाम सिंघ उस समय सिक्ख फौज़ में शामिल हुए, जब फौज सभराओं के निकट पहुंच चुकी थी। सिक्ख फौज चाहती थी कि फिरंगियों पर तुरंत धावा बोला जाए। सिक्ख फौज का सरदार सेनापति मिस्र तेजा सिंघ कहता था कि धावा नहीं बोलना क्योंकि फिरंगियों का असला-बारूद खत्म हो चुका था जिससे उनकी पराजय निश्चित थी। मिस्र लाल सिंघ ने गद्दारी करते हुए जंग का नक्शा फिरंगियों को भेज दिया। दुश्मनों ने १० फरवरी, १८४६ ई को सुबह ही हमला कर दिया। सिक्ख भी मुकाबला करने को तैयार हो गए। स. शाम सिंघ अटारी ने इस मौके पर जोश भरे शब्दों में सिक्खों से कहा, "यदि दशमेश पिता के सच्चे सपूत हो तो पुरजा-पुरजा कट मरना परंतु पीठ मत दिखाना।"

पहले तोपें चलीं, फिर घुड़सवार रेजिमेंटस में मुकाबला हुआ। स. अटारी द्वारा जोश दिलाये जाने तथा योग्य आगवानी किए जाने के फलस्वरूप सिक्खों ने फिरंगियों का भारी नुकसान किया और उन्हें पीछे धकेल दिया।

कुछ गद्दारों की गद्दारी के कारण सिक्ख वीरतापूर्वक लड़ने के बावजूद पराजित हो गए। तेजा सिंघ व लाल सिंघ ने गद्दारी की और दरिया सतलुज का सेतु तोड़कर पीछे से असला-बारूद भेजना बंद कर दिया। जब असला-बारूद खत्म हो गया, तब स. अटारी ने कृपाण हाथ में थाम ली। वे शेर की भांति अंग्रेजों पर टूट पड़े। उन्होंने कृपाण से काफी मारकाट की, किंतु दुश्मनों के आग्नेय-अस्त्र भारी पड़े और उनका शरीर गोलियों से छलनी हो गया। दशमेश पिता के सच्चे सपूत, निडर, बहादुर योद्धा स. शाम सिंघ अटारी जूझते हुए और अपना नाम इतिहास में सुनहरी अक्षरों में लिखवाते हुए शहीद हो गए। दुश्मन भी उनकी शूरवीरता, अदम्य साहस तथा हौसले का लोहा माने बिना न रह सके। इस महान् शहीद के शव को सम्मानपूर्वक अटारी ले जाया गया और १२ फरवरी, १८४६ ई को उनका अंतिम संस्कार कर दिया गया। स. शाम सिंघ अटारी की अद्वितीय शहादत को हम कभी भूल नहीं सकते। हम उनके जज़्बे, समर्पण, कुर्बानी, शूरवीरता, देश-भक्ति, धर्म-परायणता को कोटि-कोटि प्रणाम करते हैं। भारत व पंजाब के वासी अपने इस महान् सेनापति को सदैव याद रखेंगे। 

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में गुरु-महिमा का संदेश

-डॉ. नवरत्न कपूर*

गुरु : साक्षात परमेश्वर : श्री गुरु ग्रंथ साहिब में गुरु के लिए 'गुर' और 'सतिगुरु' का प्रयोग अनेक बार हुआ है। 'गुरु' वस्तुतः 'गुरु' संस्कृत वाचक शब्द ही है और संस्कृत शब्द 'सद्गुरु' का रूपांतरित अपभ्रंश रूप 'सतिगुरु' है। श्री गुरु अरजन देव जी ने 'गुरु' को साक्षात भगवान का स्वरूप माना है :

-गुरु परमेसरु गुरु गोबिंदु ॥
गुरु करता गुरु सद बखसंदु ॥
गुर जपु जापि जपत फलु पाइआ गिआन दीपकु संत संगना ॥ (पन्ना १०८०)
-गुर गोबिंद गोपाल गुर गुर पूरन नाराइणह ॥
गुर दइआल समरथ गुर गुर नानक पतित उधारणह ॥ (पन्ना ७१०)

(भाग्यशाली) व्यक्ति को गुरु की प्राप्ति होना सचमुच ईश्वर की बख़्शिश (देन) होती है। एत्दर्थ श्री गुरु रामदास जी का मनोहर वचन है :

पूरै भागि सतिगुरु पाईऐ जे हरि प्रभु बखस करेइ ॥ (पन्ना ८५१)

परमेश्वर स्वरूप गुरुदेव की शरणागति का सुफल :

(क) नाम-सिमरन की शिक्षा : सिक्ख गुरु साहिबान निराकार प्रभु के उपासक थे। निराकार प्रभु के अनेकों नाम प्रचलित हैं। गुरु साहिबान ने प्रभु-नाम-सिमरन की महिमा का बखान इस प्रकार किया है :

जिस नो लाइ लए सो लागै ॥
गिआन रतनु अंतरि तिसु जागै ॥
दुरमति जाइ परम पदु पाए ॥
गुर परसादी नामु धिआए ॥ (पन्ना ७३७)

अर्थात् गुरु की कृपा से जिसके हृदय में ज्ञान का प्रकाश हो जाता है, उसकी दुर्मति दूर हो जाती है। उसके मन में प्रभु का नाम जपने की प्रक्रिया आरंभ हो जाती है, जिसके फलस्वरूप उसे उच्च आत्मिक अवस्था प्राप्त हो जाती है।

मनुष्य की कुबुद्धि (दुरमति) दूर होने और ज्ञान-प्राप्ति के फलस्वरूप उसके मन के सारे दुख दूर हो जाते हैं और वह जन्म-मरण के चक्कर से छुटकारा पा लेता है :

कटीऐ जम फासी सिमरि अबिनासी सगल मंगल सुगिआना ॥
हरि हरि जपु जपीऐ दिनु राती लागै सहजि धिआना ॥
कलमल दुख जारे प्रभू चितारे मन की दुरमति नासी ॥
कहु नानक प्रभ किरपा कीजै हरि गुण सुणीअहि अविनासी ॥ (पन्ना ७८१)

अर्थात् गुरुदेव के मुख-कमल से अविनाशी प्रभु के गुण सुनकर दिन-रात सहज ध्यान लगाकर 'हरि-हरि' का जाप करने से मनुष्य के मन के सारे कालुष्य और दुख जल जाते हैं और उसकी दुर्बुद्धि दूर होने पर, उसका मन ज्ञानवान हो जाने पर उसका सदैव भला ही होता है। जीवन के अंत काल में यमराज की यातना से बचकर वह मुक्ति को प्राप्त हो जाता है। यही

*१६९७, जीवन संत कॉटेज, देवान मूल चंद स्ट्रीट, नजदीक आर्य समाज, पटियाला-१४७००१ (पंजाब)

भाव निम्नलिखित पदों में भी सुशोभित हैं :

आपु तिआगि परीऐ नित सरनी गुर ते पाईऐ एहु निधानु ॥
जनम मरण की कटीऐ फासी साची दरगह का नीसानु ॥ (पन्ना ८२४)

अर्थात् मनुष्य को अपना अहं-भाव त्यागकर गुरुदेव की शरण में रहकर नाम रूपी धन (निधानु) प्राप्त करना चाहिए। ऐसा करने से वह जन्म-मरण के चक्कर से छूटकर प्रभु के समक्ष पहुंच जाता है।

सुख सोहिलड़ा हरि धिआवहु ॥
गुरमुखि हरि फलु पावहु ॥
गुरमुखि फलु पावहु हरि नामु धिआवहु जनम जनम के दूख निवारे ॥
बलिहारी गुर अपणे विटहु जिनि कारज सभि सवारे ॥ (पन्ना ७६७)

अर्थात् सभी प्रकार के सुख प्रदान करने वाले हरि का गुणगान करने से भक्त को भक्ति का संपूर्ण फल प्राप्त हो जाता है। इसके फलस्वरूप वह जन्म-मरण के चक्कर के दुख से छूटकर मुक्ति प्राप्त कर लेता है। अत: मैं स्वयं को गुरुदेव पर न्यौछावर करता हूं जो कि मेरे सभी कार्य भली प्रकार संपन्न करता है।

(ख) सद्‌गुरु की सेवा का फल :

सद्‌गुरु की सेवा के बारे में श्री गुरु नानक देव जी के अनमोल वचन प्रस्तुत हैं :

गुर की सेवा चाकरी मनु निरमलु सुखु होइ ॥
गुर का सबदु मनि वसिआ हउमै विचहु खोइ ॥ (पन्ना ६१)

अर्थात् गुरु की शरण में जाकर नाम-सिमरन (सबदि) का उपदेश मन में धारण करने वाले श्रद्धालु के हृदय में विद्यमान अहंकार नष्ट हो जाता है। गुरु की सेवा में जुड़ जाने वाले मनुष्य का मन निर्मल जो जाने पर उसे सुख की प्राप्ति होने लगती है।

इसी बात की पुष्टि श्री गुरु रामदास जी ने की है :

नानक गुरमुखि आपु बीचारीऐ विचहु आपु गवाइ ॥
आपे आपि पारब्रहमु है पारब्रहमु वसिआ मनि आइ ॥
जंमणु मरणा कटिआ जोती जोति मिलाइ ॥ (पन्ना ८४९)

अर्थात् मनुष्य को अपने मन से अभिमान (रूपी अपनापन) त्यागकर, गुरु की शरण में आकर आत्मिक चिंतन करते हुए यह निश्चय करना चाहिए कि गुरु ही साक्षात भगवान है जो कि ईश्वर-ज्योति से मिलाकर मनुष्य को चौरासी लाख योनि (जंमणु मरणा) के चक्कर से छुटकारा दिलवा देता है।

जो लोग सद्‌गुरु की शरण में न आकर उसकी सेवा नहीं करते, उनकी कैसी दुर्दशा होती है इसके बारे में श्री गुरु अमरदास जी के मनोहर वचन पेश हैं :

सतिगुरु न सेवहि मूरख अंध गवारा ॥
फिरि ओइ किथहु पाइनि मोख दुआरा ॥
मरि मरि जंमहि फिरि फिरि आवहि जम दरि चोटा खावणिआ ॥ (पन्ना ११५)

अर्थात् जो व्यक्ति सद्‌गुरु की सेवा नहीं करता वह मूर्ख और अत्यंत गंवार है। (गुरुदेव के नाम-सिमरन के उपदेश के बिना) वह व्यक्ति बार-बार जन्म लेता है और मृत्यु के पश्चात् यमराज द्वारा दंडित होता है। उसे मोक्ष की प्राप्ति कदापि नहीं होती।

श्री गुरु अरजन देव जी ने ऐसे मंदभागी प्राणियों की स्थिति ताड़ना भरपूर शब्दावली में प्रकट की है :

(शेष पृष्ठ ४६ पर)

गुरबाणी चिंतनधारा : ८८

सुखमनी साहिब : विचार व्याख्या

*-डॉ. मनजीत कौर**

बीसवीं असटपदी

सलोकु ॥
फिरत फिरत प्रभ आइआ परिआ तउ सरनाइ ॥
नानक की प्रभ बेनती अपनी भगती लाइ ॥
(पन्ना २८९)

२०वीं असटपदी के सलोक में गुरु पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी पावन फरमान करते हैं कि अत्यंत भटकना के बाद मैं प्रभु की शरण में आया हूं। केवल आया ही नहीं अपितु प्रभु के चरणों में समर्पित हो गया हूं। मेरी प्रभु के चरणों में यही अरदास है कि मुझे अपने दर से भक्ति की दात बख़्शो।

गुरु पातशाह इस सलोक में कलयुगी जीवों को पावन दिशा-निर्देश देते हैं कि मनुष्य को समस्त भटकना छोड़कर प्रभु-चरणों में स्वयं को समर्पित कर देना चाहिए और प्रभु से केवल सर्वोत्तम दान 'नाम-दान' की याचना करनी चाहिए।

गुरु पंचम पातशाह पावन फरमान करते हैं कि हे प्रभु! मैं भटकता हुआ (अब) आपकी शरण में आ गया हूं। शरण आकर आपके चरणों में गिर पड़ा हूं। हे प्रभु! यही प्रार्थना है कि मुझे अपने चरण-कमलों से जोड़कर अपने दर से भक्ति बख़्श दो अर्थात् भक्ति में लीन कर दो।

वस्तुत: मनुष्य का जीवन हमेशा भटकाव की स्थिति में रहता है और इस भटकाव का मुख्य कारण है, मनुष्य का अज्ञान। हम अज्ञानता के कारण दुनियावी अर्थात् सांसारिक (निर्बल) सहारे ढूंढने में ही अपना बेशकीमती समय और ऊर्जा बर्बाद कर देते हैं। वास्तव में संसार का कोई भी प्राणी या साधन इतना सक्षम नहीं है कि जिससे हमें हमेशा के लिए सहारा मिल जाए। स्वयं मोह-माया के कारण सांसारिक (निर्बल) बंधनों में बंधे हुए प्राणी एक-दूसरे को कैसे बंधन-मुक्त कर सकते हैं? कैसे स्थायी सुख और आसरा दे सकते हैं? गुरु साहिब ने समस्त सांसारिक (झूठे) सहारे छोड़कर हमें एक सर्वशक्तिवान परमेश्वर का सहारा लेकर भक्ति की याचना की युक्ति सिखाई है :

आराधिहु सचा सोइ सभु किछु जिसु पासि ॥
दुहा सिरिआ खसमु आपि खिन महि करे रासि ॥
तिआगहु सगल उपाव तिस की ओट गहु ॥
पउ सरणाई भजि सुखी हूं सुख लहु ॥
(पन्ना ५२१)

सचमुच भक्तों को केवल और केवल सच्चे मालिक का ही आसरा होता है और उसकी कृपा-दृष्टि से समस्त दुख-क्लेश मिट जाते हैं :

भगता तेरी टेक रते सचि नाइ ॥
जिस नो होइ क्रिपालु तिस का दूखु जाइ ॥
(पन्ना ५२१)

असटपदी ॥
जाचक जनु जाचै प्रभ दानु ॥
करि किरपा देवहु हरि नामु ॥
साध जना की मागउ धूरि ॥

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३*

पारब्रहम मेरी सरधा पूरि ॥
सदा सदा प्रभ के गुन गावउ ॥
सासि सासि प्रभ तुमहि धिआवउ ॥
चरन कमल सिउ लागै प्रीति ॥
भगति करउ प्रभ की नित नीति ॥
एक ओट एको आधारु ॥
नानकु मागै नामु प्रभ सारु ॥१॥

बीसवीं असटपदी की पहली पउड़ी में गुरु पंचम पातशाह ने याचक बनकर सार-तत्व-प्रभु का नाम मांगने की युक्ति संपूर्ण मानवता को समझाई है कि परमेश्वर के चरण-कमलों से सच्ची प्रीति जोड़कर श्वास-श्वास प्रभु का सिमरन करना है। वही सब का सच्चा आसरा है। यह सब कुछ तभी मुमकिन है जब गुरु की कृपा हो जाए। गुरु साहिब ने *"साध जना की मागउ धूरि"* द्वारा यह स्पष्ट कर दिया है कि प्रभु-भक्ति की दात गुरु-कृपा से ही संभव हो सकेगी।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि हे प्रभु! दास तेरे दर पर से यही दान मांगता है कि कृपा करके मुझे अपने नाम की बख़्शिश करो।

हे प्रभु! दया-दृष्टि करके मुझे अपना नाम बख़्शकर मेरी मनोकामना पूर्ण कर दो और मुझे साधु-जनों के चरणों की धूलि बख़्श दो। हे परमेश्वर! मेरी यही हार्दिक इच्छा है कि मैं सदैव प्रभु के गुण गाता रहूं। मैं श्वास-श्वास आपका सिमरन करता रहूं। मेरी यह मनोकामना पूर्ण कर दो कि मैं हर पल आपका ही नाम जपता रहूं और मेरी आपके चरण-कमलों से प्रीति लग जाए। मैं सदैव आपकी भक्ति करता रहूं। हे परमेश्वर! एक आप ही मेरी ओट और मेरा आसरा हो। मैं आपसे सर्वोत्तम दान नाम-दान की याचना करता हूं।

उपरोक्त पउड़ी की प्रत्येक पंक्ति में हृदय की गहराई से केवल सर्वश्रेष्ठ दान नाम-दान की याचना की गई है। देने वाला केवल एक दातार पिता प्रभु है और सारा जगत याचना करने वाला है। युगों से यही सिलसिला चला आ रहा है। परमेश्वर जीवों को देता आ रहा है और जीव लेते आ रहे हैं। लेने वाले थक जाते हैं, इस दुनिया से चले जाते हैं, लेकिन देने वाले परमेश्वर के ख़ज़ाने में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं आती। यहां विचारणीय तथ्य यह है कि दुनिया में विरले जन हैं जिन्हें असल पदार्थ (नाम-दान) मांगने की जाच आई है। जिसने गुरु-कृपा सदका प्रभु से ही मांगा और वह भी सार-तत्व नाम-दान, जो सदा स्थिर है, सर्वश्रेष्ठ है, उसने समझो अपने मूल को पहचान कर परमेश्वर को मांग लिया और सदा के लिए उसी में अभेद हो गया। परमेश्वर के चरण-कमलों की प्रीति नाम-अभ्यास ही है जिसकी बदौलत श्वास-श्वास नाम जपना जीव के स्वभाव में शामिल हो जाता है। फिर उसके लिए किसी विशेष प्रयोजन की आवश्यकता नहीं रह जाती।

गुरबाणी का एक प्रमाण यहां उल्लेखनीय है। संत-जनों के स्वभाव में शांति के गुण को करोड़ों दुष्ट मिलकर भी समाप्त नहीं कर सकते। ठीक इसी तरह चंदन के वृक्ष के चारों ओर सांप लिपटे रहते हैं परंतु फिर भी वह अपनी शीतलता नहीं त्यागता :

कबीर संतु न छाडै संतई जउ कोटिक मिलहि असंत ॥
मलिआगरु भुयंगम बेढिओ त सीतलता न तजंत ॥
(पन्ना १३७३)

प्रभ की द्रिसटि महा सुखु होइ ॥
हरि रसु पावै बिरला कोइ ॥

जिन चाखिआ से जन त्रिपताने ॥
पूरन पुरख नही डोलाने ॥
सुभर भरे प्रेम रस रंगि ॥
उपजै चाउ साध कै संगि ॥
परे सरनि आन सभ तिआगि ॥
अंतरि प्रगास अनदिनु लिव लागि ॥
बडभागी जपिआ प्रभु सोइ ॥
नानक नामि रते सुखु होइ ॥२॥

बीसवीं असटपदी की दूसरी पउड़ी में पंचम पातशाह ने प्रभु की रहमत के असीम आनंद का वर्णन किया है और साथ ही स्पष्ट किया है कि कोई विरला मनुष्य ही प्रभु-नाम के रस को चखता है। जो भाग्यशाली एक बार इसे चख लेता है, वह सदा के लिए तृप्त हो जाता है। माया की आंधी उसे अपने मार्ग से विचलित नहीं कर सकती। वो हर स्थिति में अडोल रहता है।

गुरु पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी पावन फरमान करते हैं कि परमेश्वर की कृपा-दृष्टि में महा आनंद (परम सुख) है अर्थात् प्रभु की रहमत से परम सुख की प्राप्ति हो जाती है। हरि-रस की प्राप्ति किसी विरले को ही होती है। जिस जीव को यह प्राप्ति होती है, जिस किसी ने भी प्रभु के प्रेम-रस को चखकर देखा है, वो तृप्त हो जाता है अर्थात् संतोषी प्रवृत्ति का हो जाता है। ऐसे पुरुष पूर्ण पुरुष बन जाते हैं और किसी भी परिस्थिति में विचलित नहीं होते। ऐसे जीव प्रभु-प्रेम के रस में भरपूर रहते हैं। साधु-जनों की संगत में रहने वालों के हृदय में हरि-रस की प्राप्ति की उमंग बनी रहती है अर्थात् उनके हृदय-घर में हरि-रस को प्राप्त करने का चाव पैदा हो जाता है। जो जीव अन्य समस्त सहारे छोड़कर सतिगुरु की शरण में आ जाते हैं उनके हृदय-घर में (ज्ञान का) प्रकाश हो जाता है तथा उनकी लिव प्रभु-चरणों में दिन-रात लगी रहती है। ऐसे जीव सचमुच अत्यंत भाग्यशाली हैं, जो प्रभु-नाम का अभ्यास करते हैं अर्थात् भाग्यशाली जीवों ने ही प्रभु का नाम-सिमरन किया है। अंतिम पंक्ति में गुरु पातशाह समझाते हैं कि जो हरि-नाम के रंग में रंग जाते हैं, उन्हें ही सदा स्थिर सुख की, आनंद की प्राप्ति होती है।

परमेश्वर आनंद का भंडार है। जीव को यह आनंद कैसे प्राप्त हो सकता है? जवाब भी स्पष्ट है कि प्रभु-नाम से। प्रभु-नाम कैसे नसीब होता है? गुरु-कृपा से। गुरु कैसे मिलता है? प्रभु की बख़्शिश एवं दया-दृष्टि से। जिस भाग्यशाली जीव के जीवन में यह संयोग बनता है, उसके जीवन में भटकाव की गुंज़ाइश नहीं रह जाती। ऐसा नाम का अभ्यासी जीव आनंद के परम-स्रोत से हर पल जुड़ा रहेगा और उसे स्वाभाविक रूप से हर स्थिति में आनंद की अनुभूति होगी। ऐसा व्यक्ति परवरदिगार के चरणों में हर पल यही अरदास करेगा कि हे प्रभु! आपके चरण-कमल मेरे हृदय-घर में बसे रहें। हे गुणों के अथाह सागर! आप मेरे हृदय से एक पल के लिए भी विस्मृत न होना :

सुनहु बिनउ प्रभ मेरे मीता ॥
चरण कमल वसहि मेरै चीता ॥
नानकु एक करै अरदासि ॥
विसरु नाही पूरन गुणतासि ॥ (पन्ना ७४२)

जिन भाग्यशाली जीवों ने प्रभु की आराधना की है, नाम-सिमरन में जुड़े हैं, वही अपनी जीवन रूपी कमाई को सफल कर गए हैं, उन्हीं के मुख उज्ज्वल हैं लोक और परलोक में :

जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि ॥
नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि ॥
(पन्ना ८)

सेवक की मनसा पूरी भई ॥
सतिगुर ते निरमल मति लई ॥
जन कउ प्रभु होइओ दइआलु ॥
सेवकु कीनो सदा निहालु ॥
बंधन काटि मुकति जनु भइआ ॥
जनम मरन दूखु भ्रमु गइआ ॥
इछ पुनी सरधा सभ पूरी ॥
रवि रहिआ सद संगि हजूरी ॥
जिस का सा तिनि लीआ मिलाइ ॥
नानक भगती नामि समाइ ॥३॥

तीसरी पउड़ी में गुरु पंचम पातशाह ने जीव की मनोकामना पूर्ण होने का साधन एवं साध्य पूर्ण गुरु को ही माना है। सतिगुरु जीव को सिमरन की युक्ति बताकर प्रभु-चरणों में उसका चित्त लगवाकर उसे परमेश्वर से मिला देता है। परमेश्वर का नाम-सिमरन ही भक्ति है और भक्ति ही मुक्ति है।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि जब प्रभु का सेवक पूर्ण गुरु से निर्मल उपदेश (उत्तम शिक्षा) ले लेता है तब उसके सभी मनोरथ (मनोकामनाएं) पूर्ण हो जाते हैं। परमेश्वर जिस जीव पर कृपा करता है, उसे सदा के लिए निहाल कर देता है अर्थात् उसे हमेशा प्रसन्नचित्त रखता है। ऐसा व्यक्ति (माया के) समस्त बंधनों से मुक्त हो जाता है। ऐसे जीव के सभी तरह के जन्म-मरण के दुख समाप्त हो जाते हैं अर्थात् ऐसा जीव आवागमन के समस्त बंधनों से, दुखों-क्लेशों से तथा भ्रम-भुलेखों से मुक्ति पा लेता है।

ऐसे जीव की सभी इच्छाएं पूर्ण हो जाती हैं तथा उसकी श्रद्धा-भावना फलीभूत हो जाती हैं अर्थात् सभी मनोरथ सफल हो जाते हैं। ऐसे जीव को सर्वव्यापी परमेश्वर जर्रे-जर्रे में बसता दिखाई देने लगता है। गुरु पातशाह फरमान करते हैं कि जीव जिसका अंश है वही (परमेश्वर) जीव को अपने साथ मिला लेता है। प्रभु का सिमरन ही जीव के लिए बंदगी है। इसी के फलस्वरूप जीव प्रभु-चरणों में टिका रहता है।

इस पउड़ी में गुरु पातशाह ने ईश्वर की बंदगी से जीव के समस्त मनोरथों की पूर्ति होना बताया है और यह भी स्पष्ट किया है कि प्रभु का सिमरन मुमकिन होता है गुरु दर्शायी युक्ति के अनुसार जीवन बनाने से। इस पउड़ी की पहली ही पंक्ति में गूढ़ रहस्य समझाया गया है कि जब सेवक अपने गुरु से उत्तम शिक्षा लेता है तो उसके सभी मनोरथ सिद्ध हो जाते हैं। इस पंक्ति के भावार्थ स्पष्ट करते हुए प्रो. साहिब सिंघ लिखते हैं कि जीव की माया वाली भाग-दौड़ समाप्त हो गई है। वास्तव में यही है समस्त मनोरथों की सफलता का राज। यह राज समझ आता है गुरु-कृपा से। 'मूल मंत्र' में परमेश्वर के गुणों का गान करते हुए अंत में श्री गुरु नानक देव जी ने 'गुर प्रसादि' फरमाया अर्थात् "गुरु की कृपा से।" संपूर्ण बाणी ईश्वर की सिफत-सलाह है जो गुरु-कृपा से ही की जा सकती है। इसमें जीवन-युक्ति है, जीवन जीने की कला है और यह कला पूर्ण गुरु ही सिखाता है। इस कला में पारंगत व्यक्ति अकाल पुरख के चरणों में यही अरदास करेगा, हे प्रभु! मेरे मन में आपके चरणों की प्रीति बनी हुई है। मुझे न तो राज्य की इच्छा है और न ही मुक्ति की तमन्ना, मुझे तो बस आपके चरणों का ही प्यार चाहिए :

राजु न चाहउ मुकति न चाहउ मनि प्रीति चरन कमलारे ॥ (पन्ना ५३४)
सो किउ बिसरै जि घाल न भानै ॥
सो किउ बिसरै जि कीआ जानै ॥

सो किउ बिसरै जिनि सभु किछु दीआ ॥
सो किउ बिसरै जि जीवन जीआ ॥
सो किउ बिसरै जि अगनि महि राखै ॥
गुर प्रसादि को बिरला लाखै ॥
सो किउ बिसरै जि बिखु ते काढै ॥
जनम जनम का टूटा गाढै ॥
गुरि पूरै ततु इहै बुझाइआ ॥
प्रभु अपना नानक जन धिआइआ ॥४॥

बीसवीं असटपदी की चौथी पउड़ी में गुरु पातशाह ने संसारी जीवों को समझाते हुए उनसे प्रश्न भी किया है कि परमेश्वर, जो किसी की तिल-मात्र मेहनत भी नहीं रखता अर्थात् उसका भी फल देता है, उसको हृदय-घर से क्यों भुलाया जाए? जो अग्नि में भी रक्षा करता है, सब कुछ बख़्शने वाला दातार पिता है, सभी विकारों से मुक्त करने वाला है, ऐसे परम दयालु प्रभु की ही आराधना करनी चाहिए।

श्री गुरु अरजन देव जी पावन फरमान करते हैं कि मनुष्य को वह प्रभु क्यों भूल जाए अर्थात् मनुष्य के हृदय-घर से प्यारा प्रभु क्यों विस्मृत हो जो मनुष्य द्वारा की गई मेहनत को (हमेशा) याद रखता है अर्थात् मनुष्य की तिल-मात्र मेहनत को भी व्यर्थ नहीं जाने देता और किए हुए उद्यम को हमेशा ध्यान में रखता है? ऐसे में उस दातार पिता को न भुलाया जाए जिसने सब कुछ बख़्शा है, जो जीवों का प्राण-धन है अर्थात् जीवों की ज़िंदगी का आसरा है।

परमेश्वर क्यों भूल जाए? वो तो माता के गर्भ (अग्नि) में भी जीव की रक्षा करता है। कोई विरला मनुष्य ही गुरु-कृपा से इस बात (रहस्य) को समझता है कि प्रभु (किसी भी कीमत पर) भुलाने योग्य नहीं है। परमेश्वर को क्यों भुलाया जाए? वो तो माया रूपी ज़हर से बचाकर रखता है। वह विकारों से बचाकर जन्म-जन्मांतरों से बिछुड़े हुए जीवों को फिर से अपने साथ मिला लेता है। गुरु पातशाह अंतिम पंक्ति में स्पष्ट करते हैं कि जिन सेवकों को पूर्ण गुरु ने यह तथ्य समझाया है, उन्होंने ही अपने मालिक प्रभु का सिमरन किया है।

उपरोक्त पउड़ी में मनुष्य को प्रभु द्वारा किए गए उपकारों को मानने और परोपकार करने वाले के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने का पावन संदेश दिया गया है। जो किसी के द्वारा किए गए उपकारों को नहीं मानता, वह कृतघ्न माना जाता है और कृतघ्न व्यक्ति को कहीं भी ठौर-ठिकाना नहीं मिलता। उसकी ज़िंदगी नरक से भी बदतर हो जाती है। गुरबाणी हमें किसी के द्वारा किए गए उपकारों को मानने और उसके प्रति कृतज्ञता-भाव रखते हुए हृदय से उसका शुक्राना करने हेतु प्रेरित करती है।

कृतघ्न व्यक्ति की अवस्था को भाई गुरदास जी ने अपनी वारों में स्पष्ट रूप से उकेरा है। परोपकार न मानने वालों का बोझ तो धरती भी सहन नहीं कर सकती जो कि अपने पर अनंत बोझ उठाए हुए है। जो पहाड़ आकाश को छूते हैं, वे भी धरती को भारी नहीं लगते। जो घर-बार, किले तथा गढ़ दिखाई दे रहे है; जो समुद्र, नदियों के प्रवाह चलते हैं, जो वृक्ष, फलों से लदे रहते हैं, अनगिनत जीव-जंतु धरती पर चलते हैं, इनमें से कोई भी धरती को भारी नहीं लगता। केवल और केवल कृतघ्न व्यक्ति का बोझ ही धरती सहन नहीं कर सकती :

ना तिसु भारे परबतां असमान खहंदे।
ना तिसु भारे कोट गढ़ घर बार दिसंदे।
ना तिसु भारे साइरां नद वाह वहंदे।
ना तिसु भारे तरुवरां फल सुफल फलंदे।
ना तिसु भारे जीअ जंत अणगणत फिरंदे।
भारे भुईं अकितरघण मंदी हू मंदे ॥(वार ३५:८)

बीसवीं असटपदी की चौथी पउड़ी में गुरु साहिब ने हमें परमेश्वर के उपकारों को न भुलाकर हमेशा उसका सिमरन एवं शुक्राना करने का पावन संदेश दिया है जो हम जीवों द्वारा की गई किसी भी प्रकार की मेहनत को तिल-मात्र भी व्यर्थ नहीं जाने देता, जो हमें सब कुछ बख़्शता है। इसके एवज़ में परमात्मा को देने के लिए हमारे पास अपना कुछ भी तो नहीं है। सब कुछ उसी का बख़्शा हुआ है। हम केवल और केवल प्रभु की बख़्शी हुई दातों के लिए तथा उद्यम करने के लिए, दी गई शक्ति के लिए, अच्छा सोचने के लिए, दी गई सुमति (अच्छी बुद्धि) के लिए हर पल श्वास-ग्रास उसका शुक्राना करते रहें। प्रभु और रहमत करेगा। हमारी सोच (चिंतन) को, हमारे कर्म को उच्च से उच्चतम बना देगा। हमारा जीवन सफल हो जाएगा। बस, हमें उठते-बैठते, सोते-जागते उस रहमतों के सागर का धन्यवाद करना है। इस संदर्भ में मैं तो अपने मन को इन्हीं शब्दों द्वारा समझाने का प्रयत्न करती हूं :

ऐ मेरे मन! बैठकर शांति से विचार कर।
हर श्वास से उसका शुक्र हजारों बार कर।



श्री गुरु ग्रंथ साहिब में गुरु-महिमा का संदेश

(पृष्ठ ४० का शेष)

गुर मंत्र हीणस्य जो प्राणी ध्रिगंत जनम भ्रसटणह ॥
कूकरह सूकरह गरधभह काकह सरपनह तुलि खलह ॥ *(पन्ना १३५६)*

अर्थात् जो प्राणी गुरुदेव की शरण में जाकर नाम-सिमरन का उपदेश नहीं लेता उसका जन्म भ्रष्ट होता है और उसे धिक्कार है। ऐसा व्यक्ति मनुष्य जीवन के पश्चात कभी कुत्ते, कभी सूअर, कभी गधे, कभी कौए और कभी सांप के रूप में जन्म लेता है। ऐसा मनुष्य (गुरु-भक्तों को) बुरा लगता है।

निष्कर्ष : श्री गुरु नानक देव जी ने गुरु की महिमा को इस प्रकार दृढ़मूल किया है :

-गुर महि आपु रखिआ करतारे ॥
गुरमुखि कोटि असंख उधारे ॥ (पन्ना १०२४)
-गुर महि आपु समोइ सबदु वरताइआ ॥
सचे ही पतीआइ सचि समाइआ ॥ (पन्ना १२७९)

अर्थात् भगवान ने गुरु के माध्यम से अपना स्वरूप प्रकट किया है। साक्षात परमेश्वर रूप गुरु के नाम-सिमरन (सबदु वरताइआ) के प्रचार से ही यह भाव प्रकट होता है, जिसके फलस्वरूप करोड़ों ही नहीं बल्कि असंख्य भक्तों (गुरमुख) का उद्धार होता है। यह सत्य वचन अत्यंत विश्वसनीय है।

श्री गुरु अरजन देव जी ने भी गुरुदेव को भक्त का संरक्षक बताया है :

पवन झुलारे माइआ देइ ॥
हरि के भगत सदा थिरु सेइ ॥
हरख सोग ते रहहि निरारा ॥
सिर ऊपरि आपि गुरू रखवारा ॥ (पन्ना ८०१)

अर्थात् माया के प्रभाव के कारण आम मनुष्य चिंता और प्रसन्नता के आवेग में डांवांडोल हो जाते हैं किंतु भगवान के भक्त ऐसी स्थिति में भी स्थिर रहते हैं। वस्तुतः यह गुरमति-प्रेमियों के संरक्षक गुरु की कृपा का ही फल होता है।



ख़बरनामा

पंजाब के दरियाओं के बहाव : ऐतिहासिक दृष्टिकोण विषय पर सेमिनार करवाया गया

श्री अमृतसर : २२ दिसंबर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की धर्म प्रचार कमेटी द्वारा श्री कलगीधर निवास, सेक्टर २७-बी, चंडीगढ़ में संचालित सिक्ख स्रोत, ऐतिहासिक ग्रंथ संपादना प्रोजेक्ट द्वारा रीसर्च स्कॉलरों की अगुआई के लिए शुरू की गई लेक्चर श्रृंखला का कार्यक्रम हुआ, जिसका विषय था-- 'पंजाब के दरियाओं के बहाव : ऐतिहासिक दृष्टिकोण।'

श्रोताओं का स्वागत करते हुए प्रोजेक्ट निदेशक डॉ. किरपाल सिंघ ने कहा कि दरियाओं का बहाव बदलने से बहुत भूगोलिक बदलाव आते हैं। उन्होंने फारसी स्रोतों के आधार पर पंजाब के नामकरण के बारे में तथा सिक्ख गुरुद्वारों के दरियाओं के साथ सम्बंध के बारे में बताया एवं भारत तथा पाकिस्तान के विभाजन से पूर्व की 'इंडस वाटर ट्रीटी' के बारे में भी बताया।

मुख्य वक्ता स. किरपाल सिंघ दर्दी, पदमुक्त इंजीनियर, नहरी विभाग, पंजाब ने सतलुज, ब्यास, रावी आदि दरियाओं के पुरातन बहावों के बारे में विस्तारपूर्वक बताते हुए कहा कि सिक्ख धर्म के इतिहास के साथ भी दरियाओं के बहाव का गहन सम्बंध है।

प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. जे. एस. (गरेवाल) ने अपने प्रधानगी भाषण में बताया कि 'पंजाब' नाम का प्रयोग अकबर के समय से प्रचलित हुआ। अकबर काल के बाद ही इस क्षेत्र को 'पंजाब' तथा यहां के निवासियों को 'पंजाबी' कहा जाने लगा। उन्होंने कहा कि हमें प्राकृतिक शक्तियों को अपने काबू में करने की जगह इनके साथ मित्रता वाला सम्बंध रखना चाहिए।

मुख्य मेहमान के रूप में पहुंचे जत्थेदार सुखदेव सिंघ भौर, महासचिव, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी ने अपने भाषण में कहा कि मानवीय सभ्यताओं का विकास दरियाओं के तट पर ही होता रहा है। उन्होंने कहा कि सरकारों को प्रांतों के पानी बांटने सम्बंधी फैसले सही तथ्यों के आधार पर करने चाहिए। उन्होंने आज के पढ़े गए पर्चे को पुस्तकीय रूप में प्रकाशित करके संगत में बांटने का विश्वास दिलाया।

धर्म प्रचार कमेटी के सचिव स. सतबीर सिंघ ने इस प्रोजेक्ट के निदेशक डॉ. किरपाल सिंघ द्वारा किए गए उद्यम की प्रशंसा करते हुए कहा कि उनके जीवन सम्बंधी एक डाक्यूमेंटरी फ़िल्म जल्द तैयार की जाएगी। इसके अतिरिक्त समारोह में पहुंचे विद्वानों में से डॉ. रजिंदरजीत कौर ढींडसा डॉ. बरिंदर कौर, स. गुरदेव सिंघ (बराड़) पदमुक्त आई ए एस. आदि ने भी अपने विचार रखे। रीसर्च स्कॉलर स. सुखमंदर सिंघ, बीबी बलजीत कौर, डॉ. बरजिंदर कौर, डॉ. चरनजीत कौर, स. सतिंदर सिंघ, स. गुरतेग सिंघ, स. गुरप्रीत सिंघ, डॉ. अमरजीत सिंघ, स. अमरजीत सिंघ (रैणा), स. सुखचैन सिंघ, स. लछमण सिंघ, स. अवतार सिंघ, स. परमिंदर सिंघ, स. मनप्रीत सिंघ आदि हाज़िर हुए। डॉ. चमकौर सिंघ असिस्टेंट डायरेक्टर, सिक्ख स्रोत, ऐतिहासिक ग्रंथ संपादना प्रोजेक्ट ने मंच संचालक की भूमिका निभाई।

भाई गुरबख़्श सिंघ खालसा अपनी कीमती जान की संभाल करें : जत्थेदार अवतार सिंघ

श्री अमृतसर : ५ जनवरी : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि भाई गुरबख़्श सिंघ खालसा का जीवन उनके परिवार एवं पंथ के लिए बहुत कीमती है, इसलिए वे अपनी कीमती जान की संभाल करें।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि जहां तक सज़ा पूरी कर चुके सिक्ख कैदियों की रिहाई का सवाल है, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी इन कैदियों की रिहाई हेतु सुप्रीम कोर्ट के माहिर वकीलों के संपर्क में है तथा उनके साथ उच्च स्तरीय बातचीत चल रही है। शीघ्र ही कैदी सिंघों की रिहाई के लिए सुप्रीम कोर्ट में पहुंच की जाएगी।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि शिरोमणि गु. प्र. कमेटी सिक्खों की सिरमौर संस्था है। यह संस्था अपनी जिम्मेदारी को समझते हुए पंथक मामलों से कभी पीछे नहीं हटी। उन्होंने कहा कि जो मामले कानूनी हैं वे कानूनी प्रक्रिया द्वारा ही हल किए जा सकते हैं। उन्होंने कहा कि इससे पहले भी शिरोमणि गु. प्र. कमेटी ने १९८४ ई में हुई सिक्ख नसलकुशी से संबंधित केस लड़ने के लिए वकीलों का प्रबंध किया था। उन्होंने कहा कि शिरोमणि गु. प्र. कमेटी सज़ा पूरी कर चुके सिक्ख कैदियों की रिहाई के लिए पूरा ज़ोर लगाएगी।

बंदी सिक्खों की रिहाई के लिए वफ़्द उत्तर प्रदेश के राज्यपाल को मिला

श्री अमृतसर : १० जनवरी : जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की अगुआई में स. करनैल सिंघ पंजोली कार्यकारिणी सदस्य, स. दलमेघ सिंघ सचिव तथा स. परमजीत सिंघ अतिरिक्त सचिव वाले वफ़्द ने लखनऊ में उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री राम नाइक से मुलाकात की तथा सज़ा पूरी कर चुके सिक्ख कैदियों की तुरंत रिहाई के लिए उनको मांग-पत्र सौंपा।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने बताया कि बातचीत बहुद सद्भावना भरे माहौल में हुई है। उन्होंने राज्यपाल को सारी बात विस्तारपूर्वक समझाई तथा मांग की कि स. वरिआम सिंघ पुत्र स. आतमा सिंघ, जो केंद्रीय जेल बरेली में बंद है तथा वह अपनी नज़र भी गंवा चुका है, को तुरंत रिहा किया जाए, ताकि वो अपनी शेष ज़िंदगी अपने परिवार के साथ व्यतीत कर सके। उन्होंने बताया कि राज्यपाल श्री राम नाइक ने उनकी बात को बहुत ही ध्यानपूर्वक सुना है तथा विश्वास दिलाया है कि कानूनी दायरे में रहकर स. वरिआम सिंघ की रिहायी की कोशिश की जाएगी।

प्रिंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, श्री अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर से प्रकाशित किया। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-०२-२०१५